संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१३
वर्ष : २३ अंक : ४
(निरंतर अंक : २५०)

भारतीय संस्कृति पर प्रहार

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री) पूज्य बापूजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

पूज्य बापूजी के ऊपर लगे झूठे, मनगढ़ंत आरोप, बेबुनियाद दुष्प्रचार एवं उनकी गिरफ्तारी के विरोध में देशभर में करोड़ों लोग सड़कों पर उतर आये हैं।

श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी

शंकराचार्य श्री नरेन्द्रानंदजी

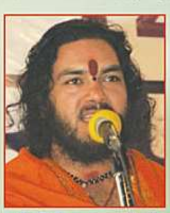

श्री दिनेश भारतीजी

श्री चक्रपाणिजी

श्री अशोक सिंहल

डॉ. प्रवीण तोगड़िया

डॉ. जयंत आठवले

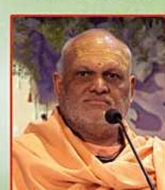

श्री विश्वेश्वरानंदजी

श्री रामेश्वर शास्त्रीजी

श्री देविन्दरसिंहजी

श्री सुरेश चव्हाणके

संत समाज पूज्य बापूजी के समर्थन में

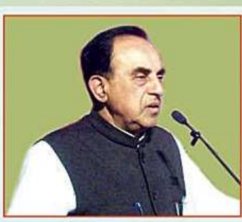

“धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में संत आशारामजी बापू सबसे आगे हैं। उनके खिलाफ किया गया केस पूरी तरह बोगस है। मेरे कानूनी सलाहकारों का यह फैसला है।”

- प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी

निर्दोष पूज्य बापूजी को बदनाम करने के लिए भले ही कुप्रचारक एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं लेकिन जागृत जनता ने झूठी खबरों को सिरे से नकार दिया है। लाखों-करोड़ों लोगों ने देशभर में मौन रैलियाँ निकालकर पूज्य बापूजी के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र का विरोध जताया।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़,अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०४
भाषा : हिन्दी(निरंतर अंक : २५०)
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१३
मूल्य :₹ ६
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ.प्रे.खो.मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

(१) संस्कृति-रक्षक प्राणायाम ४
(२) झूठे आरोपों से सावधान ! ५
(३) अमृत प्रजापति हुआ बेनकाब, अपने ही मुँह से उगले राज ६
(४) पूज्य बापूजी को 'पीडोफिलिया' बीमारी होने के दुष्प्रचार की पोल-खोल ८
(५) चालबाज महेन्द्र चावला और उसके आरोपों की हकीकत ९
(६) कितना घिनौना दुष्प्रचार ! कितनी घिनौनी राजनीति ! १०
(७) राष्ट्र जागृति ११
(८) 'आपने हमारे आशारामजी बापू को दोषी कैसे कहा ?' १५
(९) चल पड़ा 'संस्कृति-विरोधी चैनल लॉक अभियान' १६
(१०) आप कहते हैं... १७
* निर्दोष, निष्कलंक बापू - श्री निलेश सोनी
(११) संत चरित्र १९
* मानव-समाज का प्रकाश-स्तम्भ
(१२) पर्व मांगल्य २०
* आयी गुरुज्ञान की दिवाली...
(१३) आकर्ण धनुरासन २२
(१४) समाज की देख पीड़ा, संत ने उठाया बीड़ा २३
(१५) आप कहते हैं... २४
* भारत देश की शान हैं बापूजी - श्री पी. दैवमुत्थु
(१६) संस्कृति-रक्षार्थ सब एकजुट हों २७
(१७) साजिश को सच का रूप देने की मनोवैज्ञानिक रणनीति - शिल्पा अग्रवाल ३०
(१८) पत्रकारिता का चरित्र बना अविश्वसनीय ३१
(१९) क्यों नजरंदाज किया गया महत्त्वपूर्ण गवाहों को ? ३२
(२०) अमृत बरसाती शरद पूर्णिमा ३३
(२१) देश-विदेश में गूँजी पुकार, बंद हो बापूजी पर अत्याचार ३४

◆ विभिन्न टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

Care WORLD रोज सुबह ७.०० बजे

मंगलमय आश्रम इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण

YUPPTV ZENGA TV इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण

आस्था AASTHA THE FAITH CHANNEL रोज सुबह ९.४० बजे

आस्था भजन रोज रात्रि ९.२० बजे

सत्य रोज दोपहर २.०० बजे

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

दूरद्रष्टा पूज्य बापूजी द्वारा ९ वर्ष पहले 'संस्कृति-रक्षार्थ' बताया गया सरल प्रयोग, जो साथ में देता है शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता भी

संस्कृति-रक्षक प्राणायाम

- पूज्य बापूजी

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश। ऐसे ऐसे कई गये, रावण कौरव और कंस ॥

भारत के सभी हितैषियों को एकजुट होना पड़ेगा। भले आपसी कोई मतभेद हो किंतु संस्कृति की रक्षा में हम सब एक हो जायें। कुछ लोग किसीको भी मोहरा बना के दबाव डालकर हिन्दू संतों और हिन्दू संस्कृति को उखाड़ना चाहें तो हिन्दू अपनी संस्कृति को उखड़ने नहीं देगा। वे लोग मेरे दैवी कार्य में विघ्न डालने के लिए कई बार क्या-क्या षड्यंत्र कर लेते हैं। लेकिन मैं इन सबको सहता हुआ भी संस्कृति के लिए काम किये जा रहा हूँ। स्वामी विवेकानंदजी ने कहा : ''धरती पर से हिन्दू धर्म गया तो सत्य गया, शांति गयी, उदारता गयी, सहानुभूति गयी, सज्जनता गयी।''

गहरा श्वास लेकर ॐकार का जप करें, आखिर में 'म' को घंटनाद की नाईं गूँजने दें। ऐसे ११ प्राणायाम फेफड़ों की शक्ति तो बढ़ायेंगे, रोगप्रतिकारक शक्ति तो बढ़ायेंगे साथ ही वातावरण में भी भारतीय संस्कृति की रक्षा में सफल होने की शक्ति अर्जित करने का आपके द्वारा महायज्ञ होगा।

मुझे आपके रुपये-पैसे नहीं चाहिए, बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए आप रोज ११ प्राणायाम करके अपना संकल्प वातावरण में फेंको। इसमें विश्वमानव का मंगल है। ॐ... ॐ... ॐ... हो सके तो सुबह ४ से ५ बजे के बीच करें। यह स्वास्थ्य के लिए और सभी प्रकार से बलप्रद होगा। यदि इस समय न कर पायें तो किसी भी समय करें पर करें अवश्य। कम-से-कम ११ प्राणायाम करें, ज्यादा कितने भी कर सकते हैं। **अधिकस्य अधिकं फलम्।**

हम चाहते हैं सबका मंगल हो। हम तो यह भी चाहते हैं कि दुर्जनों को भगवान जल्दी सद्बुद्धि दे, नहीं तो समाज सद्बुद्धि दे। जो जिस पार्टी में है... पद का महत्त्व न समझो, अपनी संस्कृति का महत्त्व समझो। पद आज है, कल नहीं है लेकिन संस्कृति तो सदियों से तुम्हारी सेवा करती आ रही है। ॐ का गुंजन करो, गुलामी के संस्कार काटो !

दुर्बल जो करता है वह निष्फल चला जाता है और लानत पाता है। सबल जो कहता है वह हो जाता है और उसका जयघोष होता है। आप सबल बनो !

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः। (मुण्डकोपनिषद् : ३.२.४)

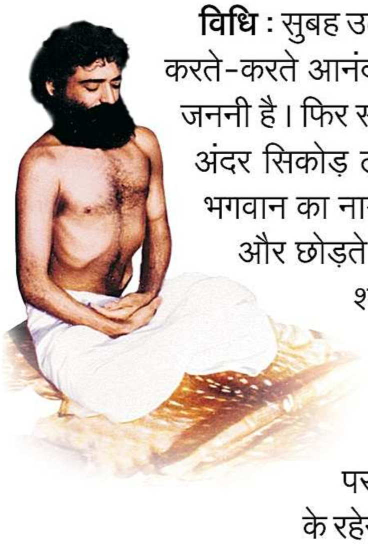

विधि : सुबह उठकर थोड़ी देर शांत हो जाओ, भगवान के ध्यान में बैठो। ॐ शांति... ॐ आनंद... करते-करते आनंद और शांति में शांत हो जायें। सुबह की शांति प्रसाद की जननी है, सद्बुद्धि की जननी है। फिर स्नान आदि करके खूब श्वास भरो, त्रिबंध करो - पेट को अंदर खींचो, गुदाद्वार को अंदर सिकोड़ लो, ठुड्डी को छाती से लगा लो। मन में संस्कृति-रक्षा का संकल्प दोहराकर भगवान का नाम जपते हुए सवा से डेढ़ मिनट श्वास रोके रखो। फिर श्वास छोड़ो। श्वास लेते और छोड़ते समय ॐकार का मानसिक जप करते रहें। फिर ५० सेकंड से सवा मिनट तक श्वास बाहर रोक सकते हैं। मन में ॐकार या भगवन्नाम का जप चालू रखो। शरीर में जो भी आम (कच्चा, अपचित रस) होगा, वायुदोष होगा, वह खिंच के जठर में स्वाहा हो जायेगा। वर्तमान की अथवा आनेवाली बीमारियों की जड़ें स्वाहा होती जायेंगी। आपकी सुबह मंगलमय होगी और आपके द्वारा मंगलकारी परमात्मा मंगलमय कार्य करवायेगा। आपका शरीर और मन निरोग तथा बलवान बन के रहेगा।

झूठे आरोपों से सावधान !

- पूज्य बापूजी

इस संसार में सज्जनों, सत्पुरुषों और संतों को जितना सहन करना पड़ा है उतना दुष्टों को नहीं। ऐसा मालूम होता है कि इस संसार ने सत्य और सत्त्व को संघर्ष में लाने का मानो ठेका ले रखा है। यदि ऐसा न होता तो गांधीजी को गोलियाँ नहीं खानी पड़तीं, दयानंदजी को जहर न दिया जाता और लिंकन व केनेडी की हत्या न होती। निंदा करनेवाला व्यक्ति किसी दूसरे का बुरा करने के प्रयत्न के साथ विकृत मजा लेने का प्रयत्न करता है। इस क्रिया में बोलनेवाले के साथ सुननेवाले का भी सत्यानाश होता है।

निंदा एक प्रकार का तेजाब है। वह देनेवाले की तरह लेनेवाले को भी जलाता है। लेनेवाले की भी शांति, सूझबूझ और पुण्य नष्ट कर देता है। यह दुनिया का दस्तूर ही है कि जब-जब भी संसार में व्याप्त अंधकार को मिटाने के लिए जो दीपक अपने आपको जलाकर प्रकाश देता है, दुनिया की सारी आँधियाँ, सारे तूफान उस प्रकाश को बुझाने के लिए दौड़ पड़ते हैं निंदा, अफवाह और अनर्गल कुप्रचार की हवा को साथ लेकर।

समाज जब किसी ज्ञानी संतपुरुष की शरण, सहारा लेने लगता है तब राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित कार्यों में संलग्न असामाजिक तत्त्वों को अपने षड्यंत्रों का भंडाफोड़ हो जाने का एवं अपना अस्तित्व खतरे में पड़ने का भय होने लगता है। परिणामस्वरूप अपने कर्मों पर पर्दा डालने के लिए वे उस दीये को ही बुझाने के लिए नफरत, निंदा, कुप्रचार, असत्य, अमर्यादित व अनर्गल आक्षेपों व टीका-टिप्पणियों की आँधियों को अपने दिलो-दिमाग में लेकर लग जाते हैं, जो समाज में व्याप्त अज्ञानांधकार को नष्ट करने के लिए महापुरुषों द्वारा प्रज्वलित हुआ था।

ये असामाजिक तत्त्व अपने विभिन्न षड्यंत्रों द्वारा संतों व महापुरुषों के भक्तों व सेवकों को भी गुमराह करने की कुचेष्टा करते हैं। समझदार साधक या भक्त तो उनके षड्यंत्रजाल में नहीं फँसते, महापुरुषों के दिव्य जीवन के प्रतिपल से परिलक्षित उनके सच्चे अनुयायी कभी भटकते नहीं, पथ से विचलित होते नहीं अपितु और अधिक श्रद्धायुक्त हो उनके दैवी कार्यों में अत्यधिक सक्रिय व गतिशील होकर सद्भागी हो जाते हैं लेकिन जिन्होंने साधना के पथ पर अभी-अभी कदम रखे हैं ऐसे कुछ नवपथिक गुमराह हो जाते हैं और इसके साथ ही आरम्भ हो जाता है नैतिक पतन का दौर, जो संतविरोधियों की शांति और पुण्यों को समूल नष्ट कर देता है।

इन्सान भी बड़ा ही अजीब किस्म का व्यापारी है। जब चीज हाथ से निकल जाती है तब वह उसकी कीमत पहचानता है। जब महापुरुष शरीर छोड़कर चले जाते हैं, तब उनकी महानता का पता लगने पर वह पछताते हुए रोते रह जाता है और उनके चित्रों का आदर करने लगता है। लेकिन उनके जीवित सान्निध्य में उनका सत्संग-ज्ञान पचाया होता तो बात ही कुछ और होती। कई अन्य महापुरुषों और शिरडीवाले साँईं बाबा के साथ भी यही हुआ। अब पछताये होत क्या...

(ऋषि प्रसाद, जनवरी १९९५ से)

पूज्य बापूजी का आशीर्वाद हमें मिलता रहे...

"मैं पूज्य बापूजी के दर्शन और आशीर्वाद के लिए लालायित था। बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा आनंद आया, बड़ा बल मिला है।

पूज्य बापूजी का आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।"

- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

कुप्रचारकों, निंदकों की खुल गयी पोल

अमृत प्रजापति हुआ बेनकाब, अपने ही मुँह से उगले राज

पिछले कुछ दिनों से वैद्य अमृत प्रजापति विभिन्न न्यूज चैनलों पर पूज्य बापूजी और आश्रम पर झूठे, बनावटी आरोप लगा रहा है जबकि हकीकत इस प्रकार है :

आश्रम से निकाले गये वैद्य अमृत गुलाबचंद प्रजापति ने पहले मीडिया में आरोप लगाया था कि आश्रम में तंत्रविद्या होती है। १३-३-२०१० को न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग में हुई विशेष पूछताछ में उसने स्वीकार करते हुए कहा कि **आश्रम में उसने तंत्रविद्या होते हुए देखा नहीं है। जब से उसने आश्रम छोड़ा, तब से ही तांत्रिक विधि की बात कहने लगा है।**

८ अगस्त २००८ को एक फैक्स के माध्यम से पूज्य बापूजी को जान से मारने की धमकी दी गयी थी तथा बापूजी से ५० करोड़ रुपये की फिरौती माँगी गयी थी। एक सप्ताह में फिरौती न देने पर पूज्य बापूजी व नारायण साँईं को तंत्रविद्या के, जमीनों के, लड़कियों के तथा अन्य फर्जी केसों में फँसाने की धमकी दी गयी थी। इस फैक्स के संदर्भ में अमृत वैद्य ने स्वीकार किया कि **''इस फैक्स में जो मोबाइल नम्बर और लैंडलाइन नम्बर लिखे हैं, वे मेरे ही हैं।** इस फैक्स में जो नाम लिखे हैं - दिनेश भागचंदानी-अहमदाबाद, शेखर-दिल्ली, महेन्द्र चावला-पानीपत, राजू चांडक-साबरमती, शकील अहमद तथा के. पटेल - इनको मैं पहचानता हूँ।''

इस फैक्स के अनुसार फिरौती न मिलने पर पूर्व-योजना के अनुसार अमृत प्रजापति ने सप्ताहभर में ही एक बुरकेवाली औरत को मीडिया के सामने पेश कर बापूजी पर झूठे आरोप लगवाने का नीच कर्म किया था। इस बारे में जाँच आयोग में सवाल किये जाने पर उसने असलियत उगलते हुए कहा : ''मैंने व मेरी पत्नी ने पत्रकारों को बापू के खिलाफ बयान दिये हैं। इस हेतु **मैंने मेरी पत्नी को स्वयं अपने हाथों से बुरका पहनाया और पत्रकारों के सामने पेश किया।** पत्रकारों के द्वारा उसका फोटो लिया गया। **मेरी पत्नी दिल्ली की है, उसका नाम सरोज है।''**

१७-१०-०८ को सूरत के रांदेर पुलिस थाने में भी उसने उपरोक्त बात स्वीकार की थी। जबकि बुरकेवाली को मीडिया के समक्ष पेश करते समय कपटमूर्ति अमृत ने झूठ बोला था कि **''यह पंजाब से आयी है व मैं इसे नहीं जानता हूँ।''**

राजू चांडक ने स्टिंग ऑपरेशन में स्वीकार किया था कि ४० हजार रुपये, शराब की बोतलें एवं कुकर्म के लिए बाजारू लड़कियाँ देकर बापू पर आरोप लगाने के लिए उसने ठग सुखाराम को खरीदा था। इन तीनों की गोपनीय गोष्ठी के पाँच दिन बाद ही २६-८-२००८ को ठग सुखाराम ने पूज्य बापूजी पर आरोप लगाये थे।

अमृत वैद्य को आश्रम से निकालते समय (दिनांक ९-२-०५) की एक विडियो सीडी जाँच आयोग के समक्ष प्रस्तुत की गयी। सीडी में अमृत वैद्य ने उसके द्वारा आश्रम के नियमों को भंग किये जाने की बात स्वयं ही कबूल की थी। अमृत वैद्य ने साधुताई के कपड़े उतारकर पैंट-शर्ट स्वयं अपने

हाथों से पहने थे। सीडी देखकर चकित हुए न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी ने जब अमृत से पूछा कि ''**क्या यह तुम ही हो ?**'' तो अमृत ने लज्जित होते हुए गर्दन झुकाकर जवाब दिया : ''**हाँ साहब ! यह मैं ही हूँ।**'' अंत में सच का सामना करते हुए मजबूर, दुष्कर्मी अमृत ने स्वीकार किया : ''यह सीडी मैंने अभी देखी। मुझे आश्रम से निकाल दिया गया था यह हकीकत है, सत्य है।''

उल्लेखनीय है कि बड़ौदा में पीएच.डी. कर रहा एक नवयुवक हरिकृष्ण ठक्कर अप्रैल २००९ में इस अमृत वैद्य की लापरवाही व गलत इलाज से मर गया बेचारा ! अमृत वैद्य आखिर विष वैद्य साबित हुआ ! अपनी नेम प्लेट पर बिना प्रमाणपत्र के ही **'एम.डी.'** लिखकर लोगों को ठगनेवाले इस वैद्य ने पत्रकारों के समक्ष स्वयं माना कि उसने किसी भी विश्वविद्यालय से एम.डी. नहीं की है। अपने को चरक (प्रसिद्ध आयुर्वेदिक दवा कम्पनी) का मान्यताप्राप्त कन्सलटेंट बताकर लोगों से पैसे ऐंठनेवाले अमृत के बारे में चरक कम्पनी के प्रबंधक ने पत्रकारों को बताया कि अमृत प्रजापति को हम बहुत पहले ही निकाल चुके हैं। हमारी कम्पनी का उससे किसी प्रकार का कोई भी संबंध नहीं है।

अमृत प्रजापति की अय्याश, लोभी और राक्षसी प्रवृत्ति खुलकर समाज के सामने आयी जब कोटा (राज.) में उसकी ऐसी करतूतों के लिए एफआईआर दर्ज हुई। पवन कुमार करमचंदानी ने फरियाद में अमृत की नीच हरकतों का जिक्र किया है, जिसके अंतर्गत उसके द्वारा महिलाओं को बुरी नजर से देखने, उनके साथ छेड़ाछेड़ी करने की वारदातों का उल्लेख है।

जब उसे बापूजी तथा उनके द्वारा नियुक्त पदाधिकारी द्वारा ऐसे कृत्य करने से रोका गया तो वह कहने लगा : ''बाबा को, आशाराम बापू को तो मजा चखा के रहूँगा।''

१०-०९-२००८ को अमृत वैद्य गुजराती अखबार की प्रतियाँ लेकर पवन कुमार के घर आया और उसने पवन को बापूजी के लिए गंदे, झूठे आरोपों को उन अखबारों में छपवाने की बात बतायी। पवन के मना करने पर उससे २५,००० रुपये माँगने लगा और न देने पर उनके लिए भी गलत खबर छपवाकर बदनाम करने की धमकी दी।

इससे परेशान होकर पवन कुमार ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करवायी। धारा २९५ए, ४९९, ५००, ५०१, ३८४, २९६, २९८ के तहत अमृत वैद्य को गिरफ्तार किया। दो दिन बाद वह जमानत पर छूटा और उस पर केस चल रहा है।

इस प्रकार महिलाओं के साथ छेड़छाड़, धोखाधड़ी, मरीजों की लूट, धमकी देना आदि कितने ही दुष्कर्म करनेवाले अमृत वैद्य ने मौका पाकर अब नये मनगढ़ंत, अनर्गल आरोप लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं।

अमृत प्रजापति ने आरोप लगाया कि 'बापूजी के पंचेड़ आश्रम (म.प्र.) में अफीम उगायी जाती है। उससे 'पंचेड़ बूटी' बनती है। यह गोली पहले मैं बनाता था, अब बापू की वैद्य बनाती है।'

इस आरोप की पोल खोलते हुए आश्रम की नीता वैद्य ने मीडिया को बताया कि ''इस नाम की कोई औषधि आज तक हमारे आश्रम में बनी नहीं है, न हमने कभी बनायी है। यह अफीम या पंचेड़ बूटी की बात ही बिल्कुल कपोलकल्पित, मनगढ़ंत है तो बापूजी के द्वारा उसके सेवन का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। और जब अमृत प्रजापति ने स्वयं मीडिया में खुलेआम दावा किया है कि वे विधिवत् अफीम की गोली बनाते हैं तो तत्काल उनके ऊपर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।

आबकारी खाते के द्वारा पंचेड़ आश्रम की

छानबीन की गयी और उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि इस प्रकार की पंचेड़ बूटी अथवा अफीम की खेती हमें पंचेड़ आश्रम में नहीं मिली है। दूसरा, बापूजी की खून की सभी जाँचें पूर्णतः सामान्य हैं। तो क्या वर्षों से अफीम खानेवाले व्यक्ति के खून की जाँच सामान्य आ सकती है ?''

वास्तव में पूज्य बापूजी के सत्त्वबल से, सत्संग-सान्निध्य में आनेमात्र से लाखों-लाखों लोगों के व्यसन छूट गये इससे जो परेशान हैं, उन्हीं देशद्रोही तत्त्वों के मोहरे बन बैठे ये अमृत प्रजापति आदि अब ऐसे-ऐसे अनर्गल आरोप लगाने पर उतारु हो गये हैं।

अमृत वैद्य की बुद्धि का दिवालियापन

बिना 'एम.डी.' डिग्री के अपने नाम के आगे 'एम.डी.' लगवानेवाले अमृत वैद्य ने नया ही सिद्धांत खोज निकाला कि व्यभिचार करने से १५० वर्ष की दीर्घायु प्राप्त होती है। इस सिद्धांत का प्रचार करने के लिए वह कभी एक चैनल पर तो कभी दूसरे चैनल पर भागा-भागा फिरता दिख रहा है। ऐसी अनर्गल बातें ही उन्हें बकनेवालों का चरित्र, उनकी अभिरुचि, उनकी मति का स्तर समाज के सामने खुला कर देती हैं।

पूज्य बापूजी स्वयं संयम का पालन करते हैं तथा अपने करोड़ों श्रोताओं एवं विद्यार्थियों को भी दृढ़ता से संयम का पालन करने की प्रेरणा देते हैं। 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक इसका ज्वलंत प्रमाण है। पूज्यश्री ने युवाधन सुरक्षा अभियान चलाया है। भारत के करोड़ों लोगों का संयम द्वारा ओज-तेज, आयु, स्वास्थ्य बढ़ाया है।

अधिक आयु की प्राप्ति के लिए भोग का अवलम्बन लिया जाता है – ऐसे अनर्गल सिद्धांतों का प्रचार कर अमृत प्रजापति जैसा चरित्रहीन वैद्य भारत के लोगों को गुमराह ही तो कर रहा है !

आखिर धूर्त अमृत वैद्य का सच सामने आ ही गया। ऐसे कुप्रचारक सच्चाई सामने आने पर अब चौतरफा बरस रही लानत के पात्र बन रहे हैं। लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के अपराधी पर लोग कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं।**– श्री अरविंद पटेल**

पूज्य बापूजी को 'पीडोफिलिया' बीमारी होने केदुष्प्रचार की पोल-खोल

१ अक्टूबर को टीवी चैनलों व २ अक्टूबर को अखबारों द्वारा झूठी खबर प्रचारित की गयी कि बापूजी को पीडोफिलिया की बीमारी है, जोकि सरासर गलत है।

सरकारी वकील के सहयोगी वकील जो कि शिकायतकर्त्री के भी वकील हैं, उन्होंने कोर्ट में पीडोफिलिया (बाल यौन शोषण से संबंध रखनेवाली बीमारी) की जो बात कही थी, उसका मीडिया के सामने स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि 'जिसके ऊपर ऐसे आरोप लगते हैं उसे पीडोफिलिया हो सकता है, ऐसा हमने कहा था। हमने पीडोफिलिया का आरोप नहीं लगाया है।'

'पीडोफिलिया' की बात केवल उक्त वकील के दिमाग व समझ की महज एक उपज थी, उसमें कोई भी तथ्य नहीं था। उनकी बात की पुष्टि के लिए उनके पास कोई ठोस सबूत नहीं था।

दूसरा, न्यायालय के द्वारा नियुक्त बोर्ड के द्वारा बापूजी की मेडिकल जाँच की गयी तब उसी बोर्ड के द्वारा दी गयी रिपोर्ट के अनुसार पूज्य बापूजी मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ हैं।

वास्तविकता यह होते हुए भी कुछ मीडिया ने पूज्य बापूजी को बदनाम करने के उद्देश्य से खबर फैलायी कि 'सरकारी वकील ने कोर्ट में बापूजी की मेडिकल रिपोर्ट पेश की, जिसके मुताबिक वे पीडोफिलिया नाम की बीमारी से ग्रस्त हैं।' कैसी नीची मानसिकता है !

चालबाज महेन्द्र चावला और उसके आरोपों की हकीकत

झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगानेवाले महेन्द्र चावला की पोल उसके भाइयों ने ही खोल दी । उसके सगे भाइयों - श्री तिलक चावला, श्री देवेन्द्र चावला व श्री जितेन्द्र चावला से प्राप्त जानकारियाँ हैरान करनेवाली हैं। उनका कहना था :

''महेन्द्र की ८वीं पास होने के बाद कुछ आदतें गलत हो गयी थीं। वह ९वीं व १०वीं में फेल हो गया था। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के बावजूद हमने उसकी पढ़ाई के लिए पानीपत में अलग कमरे की व्यवस्था की। महेन्द्र चोरियाँ करता था। एक बार घर से ७ हजार रुपये लेकर भाग गया था। एक हफ्ते बाद वापस आने पर बोला कि 'मेरा अपहरण हो गया था।' बाद में उसने स्वीकार कर लिया था कि उसने झूठ बोल दिया था।

कुछ स्वार्थी असामाजिक तत्त्वों के बहकावे में आकर महेन्द्र कुछ-का-कुछ बकने लगा। इसे जरूर १०-१५ लाख मिले होंगे।

उसने यह भी बताया कि नारायण साँईं के बारे में उसने जो अनर्गल बातें बोली हैं, वे बिल्कुल झूठी व मनगढ़ंत हैं । हम साल में २-३ बार अहमदाबाद आश्रम जाते हैं और लगातार महीनेभर भी वहाँ रह चुके हैं लेकिन कभी ऐसा कुछ नहीं देखा-सुना। अभी जो लड़की उसके साथ है (अविन वर्मा) वह पहले क्यों नहीं बोली ? उसी समय निकलकर बोलती कि हमारे साथ ऐसा-ऐसा हुआ है।

महेन्द्र इससे पहले कभी हमें कुछ क्यों नहीं बोला ? अभी एकदम क्यों ऐसा बोलना शुरू कर दिया ? वह सरासर झूठ बोल रहा है।''

श्री तिलक चावला ने यह भी बताया कि ''महेन्द्र के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हुई थी क्योंकि यह किसीसे सामान लेकर आया था, उसके पैसे नहीं दिये थे, बड़ी मुश्किल से हम लोगों ने समझौता करवाया। एक बार तो महेन्द्र ने एक व्यक्ति की पीठ में स्टेपलर मार दिया, उसको पटककर मारा, जिस कारण उसे टाँके भी लगे। लेकिन उन लोगों ने हमारी वजह से इसको छोड़ दिया।

आश्रमवाले क्यों किसीको मारने की धमकी देंगे ? महेन्द्र के साथ चार-पाँच लोगों की गैंग है। दूसरों की आवाज निकाल के 'मैं नारायण साँईं बोल रहा हूँ, मैं फलाना बोल रहा हूँ... मैं यह कर दूँगा, मैं वह कर दूँगा ।' ये सब लोग मिलकर पता नहीं क्या-क्या साजिश कर रहे हैं ! हमें तो यह डर है कि यह जिन लोगों के साथ मिला हुआ है वे इसे मरवा ही न दें ?''

चालबाज महेन्द्र चावला ने स्वयं लगाये हुए झूठे आरोपों की पोल खोलते हुए न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग के समक्ष कहा था कि ''मैंने अहमदाबाद आश्रम में कोई तंत्रविद्या होते हुए देखा नहीं।'' उसने यह भी स्वीकारा कि ''यह बात सत्य है कि कम्प्यूटर द्वारा किसी भी नाम का, किसी भी प्रकार का, किसी भी संस्था का तथा किसी भी साइज का लेटर हेड तैयार हो सकता है। बनावटी हस्ताक्षर किये गये हों, ऐसा मैं जानता हूँ।''

अब ये ही महेन्द्र चावला और अमृत वैद्य मीडिया में आकर चरित्रहनन आदि के मनगढ़ंत आरोप लगा रहे हैं। इनकी वास्तविकता जानने के बाद अब पाठक स्वय ही निर्णय करें ऐसे लोगों से किसी प्रकार के सच की उम्मीद क्या की जा सकती है ?

- श्री अरविंद पटेल

पिछले अंक की 'ढूँढ़ो तो जानें' पहेली के उत्तर
(१) पद्मासन (२) सिद्धासन (३) सर्वांगासन (४) हलासन (५) पवनमुक्तासन

कितना घिनौना दुष्प्रचार !
कितनी घिनौनी राजनीति !

छिंदवाड़ा गुरुकुल की सहेलियों को जाते-जाते आरोप लगानेवाली लड़की कहती गयी कि ''अब देखना गुरुकुल का क्या होता है ! मैं अपना नाम करूँगी। गुरुकुल की जड़ उखाड़ के रख दूँगी। न होगा गुरुकुल, न मुझे आना पड़ेगा।''

यह बात आरोप करनेवाली लड़की की सहेली ने अपने पिता को बतायी और अन्य लोगों तक पहुँची, हम तक भी पहुँची। छिंदवाड़ा से शाहजहाँपुर १००० कि.मी. से अधिक व शाहजहाँपुर से जोधपुर १००० कि.मी. से अधिक, कुल २००० कि.मी. से अधिक अंतर हो जाता है। अब सोचो, इतने दूर से माँ-बाप के साथ लड़की को बुलाकर, माँ बाहर बरामदे में बैठी है, बाप भी वहीं है उस समय उसका मुँह दबाकर हाथ घुमाते रहे... क्या ऐसा सम्भव है ? 'मैं चिल्लाती रही और माँ-बाप को भी नहीं सुनायी दिया ! पास में स्थित किसान के घर में रहनेवालों को भी सुनायी नहीं दिया !' कैसी कपोलकल्पित कहानी है !

दुष्कर्म नहीं हुआ और यह बात लड़की स्वयं बोलती है, उसकी मेडिकल रिपोर्ट भी बोलती है। मुँह दबाया हो ऐसी कहीं कोई खरोंच भी लैबोरेटरी रिपोर्ट में नहीं पायी गयी। फिर भी 'दुष्कर्म है, दुष्कर्म है...' - ऐसा मीडिया का दुष्प्रचार कितना घिनौना है ! राजनीति कितनी घिनौनी है ! साजिशकर्ताओं की, धर्मांतरणवालों की साजिश कितनी घिनौनी है ! कोई भी समझ सकता है आसानी से कि साजिश है, राजकारण है, मनगढ़ंत कहानी है। और पाँच दिन बाद न जोधपुर में न शाहजहाँपुर में, एफआईआर दर्ज की जाती है दिल्ली में रात को २-४५ बजे ! यह तथ्य तो साजिश की पोल ही खोल देता है। पुलिस पर ऊपर से दबाव ऐसा था कि उनको तो मानसिक दबाव देकर बापूजी से हस्ताक्षर ही कराने थे, वे उन्होंने करवा लिये। दो-दो, तीन-तीन दिन का जागरण और मानसिक दबाव... पुलिस के मनमाफिक लिखे हुए कागजों पर व कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवा के लाखों-करोड़ों लोगों को सताने व उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने का काम किया गया। इस घिनौनी साजिश से तो हृदय भी काँपता है, कलम भी काँपती है। आश्चर्य है ! आश्चर्य है !! आश्चर्य है !!!

सत्यवक्ताओं को और 'ऋषि प्रसाद' के पाठकों को भगवान दृढ़ता दे और सुंदर, सुहावनी सूझबूझ दे। भारतीय संस्कृति को मिटानेवालों की संतों को बदनाम करने की मलिन मुरादें नाकाम हों। सभी संतों, प्रवक्ताओं और पाठकों को ईश्वर विशेष-विशेष आत्मबल, ओज अवश्य-अवश्य प्रदान करते हैं। ॐ ॐ ॐ... उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम - ये छः सद्गुण जहाँ, पद-पद पर प्रभु की प्रेरणा-सहायता वहाँ ! ॐ ॐ ॐ...

करोड़ों भक्तों को, जिन्होंने आँसू बहाये, जप किया, धरना दिया, धैर्य, शांति का परिचय दिया व कुप्रचार को सुप्रचार से काटने का यह भगीरथ कार्य किया और करते रहेंगे, उनको और उनके माता-पिता को धन्यवाद है ! **धन्या माता पिता धन्यो...**

शरद पूर्णिमा १८ अक्टूबर २०१३
संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद

राष्ट्र जागृति

अब देश में महान क्रांति होगी !

– महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी, राष्ट्रीय महामंत्री, 'अखिल भारतीय संत समिति'

'अखिल भारतीय संत समिति' के ११ लाख संत जो हमारे सदस्य हैं, हम पूरी समिति के साथ जहाँ बापू का पसीना गिरेगा वहाँ खून देने को तैयार हैं । अब देश में महान क्रांति होगी ! हमें नाज है बापू पर ! क्यों ?

हम नाज उन पर क्या करें ! जिन्हें जमानों ने बदल दिया ।
हम तो बापूजी पर नाज करते हैं । जो जमाना बदल दे रहे हैं ॥

पाखंडी को पद से निकालने के लिए धन्यवाद !

– युवा क्रांतिद्रष्टा संत दिनेश भारतीजी

आज प्रमोद कृष्णम् जैसे पाखंडी जो पैसे से तुलते हैं, वे बापूजी के ऊपर आक्षेप लगाते हैं । प्रमोद कृष्णम् को 'अखिल भारतीय संत समिति' ने उनके पद से ही निकाल दिया, संत समिति को धन्यवाद है ।

श्री आशु मोंगिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, 'गौरक्षा सेना' : जो बापू के बारे में पेड समाचार छाप रहे हैं, उनसे मैं एक चीज पूछता हूँ कि क्या आप लोग कोई यथार्थ काम करते हैं या सिर्फ पैसा ले के काम करते हैं ?

श्री नारायण साँईंजी : पूरे विश्व में शांति, भगवत्प्रेम, करुणा, सद्भावना, माधुर्य का संदेश भारत ने पहले भी पहुँचाया है और पूज्य बापूजी के माध्यम से यह संदेश सदैव जाता रहा है । षड्यंत्रकारी लाख कोशिशें कर लें लेकिन उनके षड्यंत्र सफल नहीं होंगे !

हमारे पूज्य बापूजी भारत के गौरव हैं

– स्वामी श्री ओमजी महाराज, अध्यक्ष, 'हिन्दू राष्ट्रनिर्माण महासंघ'

संत आशाराम बापूजी करुणावतार, अवतारी संत हैं । हमारे बापू एक साधारण संत नहीं हैं, लीलाशाही (सद्गुरु स्वामी लीलाशाहजी की) परम्परा के महान संत हैं । हमारे परम पूज्य बापूजी भारत के गौरव हैं, हिन्दू धर्म के गौरव हैं ।

पूज्य बापूजी निर्दोष हैं

– श्री रमेश शिंदेजी, राष्ट्रीय प्रवक्ता, 'हिन्दू जनजागृति समिति'

पूज्य बापूजी निर्दोष हैं । बापूजी ने 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक करोड़ों की संख्या में बाँटी है । जिसमें व्यभिचार होता था उस 'वेलेंटाइन डे' को बदलकर बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिन' बनाया है । जो गलत राह पर जाते थे उन युवाओं को सही मार्ग पर लानेवाले बापूजी हैं और उनके ऊपर ये कैसे आरोप लगाते हैं !

बिके हुए चैनलों को घर से निकाल देना चाहिए

– श्री अभय वर्तक, राष्ट्रीय प्रवक्ता, 'सनातन संस्था'

पूज्य बापूजी के ऊपर जो सरासर झूठे आरोप लगाये गये हैं इससे हरेक हिन्दू के मन को पीड़ा हुई है।

हरेक हिन्दू जानता है कि ये जो षड्यंत्र रचा गया है, इसके पीछे एक अंतर्राष्ट्रीय शक्ति है, जो इस षड्यंत्र को नियंत्रित कर रही है और दुर्भाग्य से हमारे देश के ही कुछ नागरिक चाहे वे मीडिया में हों, चाहे सत्ता में हों उस षड्यंत्र का एक भाग बन चुके हैं। बापूजी जैसे संत लोगों की भलाई करते हैं लेकिन सरकार तो उनके चरणों के नीचे काँटें बिछा रही है। हिन्दू समाज को इकट्ठा होते देख उनसे सहा नहीं जा रहा है।

हमारे परम पूज्य बापूजी निर्दोष होते हुए भी उनके ऊपर अन्याय किया जा रहा है, वह भी इस राष्ट्र में जहाँ लोकतंत्र है। सच्चाई सामने लाना जिस पत्रकारिता का प्रथम कर्तव्य है, उन्हींमें से कुछ बिके हुए लोग सच्चाई छुपाकर गलत बातें लोगों के मन में संस्कारित कर रहे हैं।

जो चैनल हमारे पूजनीय बापूजी के ऊपर कीचड़ उछालते हैं, उन बिके हुए चैनलों को पहले घर से निकाल देना चाहिए। पूज्य बापूजी और हिन्दू धर्म पर झूठे आरोप लगानेवाले चैनलों और पत्रिकाओं का हम सब बहिष्कार करते हैं, उन्हें धिक्कारते हैं!

एक दूसरी स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हो गयी है। सरकार को मालूम है कि 'अरे, बापूजी पर हम कीचड़ उछाल रहे थे, इतने सारे संत इकट्ठे हो गये! अब क्या करेंगे ?' इसलिए सरकार ने रणनीति बनायी है और उसका पहला पत्थर महाराष्ट्र से रखा गया है। महाराष्ट्र में 'अंधश्रद्धा निर्मूलन' कानून पारित हो गया है। पूरे हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज के संतों का विध्वंस करनेवाला यह कानून है। मैं सभी संतगणों से यह प्रार्थना करूँगा कि इस 'पत्थर' को उसी महाराष्ट्र की जमीन में दबा देना चाहिए।

हमें इस राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र बनाना होगा। जिसमें सरकार वेदपाठशाला चलायेगी, जिसमें सरकार हरेक स्कूल में 'ऋषि प्रसाद' को पढ़ायेगी और उसी राष्ट्र में संतों के मार्गदर्शन के अनुसार वहाँ के राज्यकर्ता राज्य करेंगे। ऐसा हिन्दू राष्ट्र बनाने का संकल्प हम करेंगे। फिर कोई हिम्मत नहीं करेगा कि पूज्य बापूजी के ऊपर कीचड़ उछाले।

बापू आशारामजी के ऊपर षड्यंत्र रचना बहुत निंदनीय है

– संत श्री बाबा देविन्दरसिंहजी, अध्यक्ष, 'आश्रम निर्मल कुटिया'

बापू आशारामजी जैसे महात्मा जो लाखों लड़कियों की इज्जत बचाने के लिए नित्य परिश्रम करते हैं, उनके ऊपर यह षड्यंत्र रचना बहुत निंदनीय है। जिधर-जिधर से आशारामजी जाते हैं उधर-उधर धर्म का रास्ता बनता है व बनेगा। वह भी समाँ आयेगा जब ऐसे संगत फिर बैठेगी और बापूजी ज्ञान का दान करेंगे, वह दिन दूर नहीं।

वेदांत हमें ज्ञानमयी दृष्टि देता है। जिस बेवकूफी के कारण यह संसार हमें सत्य एवं स्थिर भासता है, उसको हटाकर जिसकी सत्ता से ऐसा भासता है उस परमात्मा का साक्षात्कार करा देता है वेदांत।

दुनिया की बेईमानी व दुष्कृत्यों के सबसे बड़े शत्रु बापूजी हैं

– श्री सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, 'सुदर्शन चैनल'

पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में सादर प्रणाम ! आज इस दुनिया की बेईमानी का, दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा शत्रु अगर कोई है तो बापूजी हैं । इसलिए उनके ऊपर सबसे ज्यादा हमले (षड्यंत्र) हो रहे हैं । जो किसीको नुकसान नहीं पहुँचा सकता है उस पर कोई क्यों हमला करेगा ? बापूजी में हौसला है, हिम्मत है । पूज्य बापूजी ने धर्मांतरण रोकने का बहुत बड़ा काम किया है ।

आध्यात्मिक कार्य में बापूजी के ५० साल तो कम-से-कम हो ही गये हैं । इतने सालों में ६ करोड़ भक्त हैं । मैं इस आँकड़े को कम करके कहता हूँ क्योंकि कोई यह न कहे कि यह बढ़ावा है । माना २ करोड़ भक्त ५० सालों तक अगर शराब नहीं पीते हैं तो १८ लाख ८२ हजार करोड़ रुपये बचते हैं । अगर सिगरेट का आँकड़ा निकालें तो ११ लाख करोड़ ३६ हजार रुपये होता है । ऐसे ही गुटके का आँकड़ा है । बापूजी के सुसंस्कारों से जिनके कदम डांस बार जाने से रुके उनके आँकड़े भी ऐसे ही होंगे । ब्रह्मचर्य का जो संदेश बापूजी ने दिया है, उससे अश्लील सामग्री बनानेवाली कम्पनियों का लाखों-करोड़ों रुपये का नुकसान होता है । इन सारे आँकड़ों को मैं अभी जोड़ रहा था तो ये आँकड़े कई लाख खरब में जा रहे हैं । इतने खरब रुपये का बापूजी ने जिन कम्पनियों का नुकसान किया है, उनके लिए कुछ हजार करोड़ रुपये बापूजी के खिलाफ लगाना कौन-सी बड़ी बात है ! इसके पीछे का असली अर्थशास्त्र यह है ।

जो पिछले १२०० सालों में सम्भव नहीं हुआ वह आनेवाले १० सालों में दिख रहा है । इन १० सालों में **इस देश को गुलाम बनाने से रोकने में सबसे जो बड़ी शक्ति है तो वह आशारामजी बापू हैं । इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं ।** ऐसे में हम लोगों को इनका साथ देना जरूरी है क्योंकि बापूजी की प्रवृत्ति तो माफ करने की है और हमारी प्रवृत्ति होनी चाहिए सजा देने की । व्यक्ति अगर संस्कारित नहीं होगा तो अपराध बढ़ेगा और अपराध केवल व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक अपराध बढ़ेगा । हमारी बहनें और माताएँ, बेटियाँ सुरक्षित नहीं रहेंगी, यह भी एक बड़ा परिणाम है ।

ये सारे चैनल दो कारणों से दुष्प्रचार करते हैं । एक तो बड़ा कारण है स्पोंसरशिप, दूसरा कारण है टीआरपी । एक आसान काम है, जब भी ऐसी न्यूज शुरू हो तो देश के करोड़ों भक्त उन चैनलों को बंद कर दें । अगर ६ करोड़ साधक ऐसे चैनलों को बंद कर दें तो ये सारे अनाप-शनाप बोलनेवाले बंद हो जायेंगे । सबसे पहले अगर कुछ करना है तो यह करना है । उसके बाद बाकी चीजें करनी हैं । दूसरा, सोशल मीडिया में ऐसे चैनलों के जो पेज हैं उनको डिस्लाइक करें, उस पर अपनी बातों को रखें । तीसरा, जिन टीवी चैनलों पर हमारे बापूजी, हमारे धर्म की बदनामी की जा रही है उन पर जो विज्ञापन चल रहे हैं उन कम्पनियों की वेबसाइट से उनके नम्बर और ईमेल आईडी निकालिये और उनको बोलिये कि 'तुम जिस चैनल को विज्ञापन देते हो वह चैनल मेरे बापूजी का दुष्प्रचार करता है, इस पर विज्ञापन दोगे तो तुम्हारा प्रोडक्ट नहीं लेंगे ।' यह उपाय अपनाइये । चौथा, संत-सम्मेलन तहसील, जिला, राज्य स्तर पर, विभिन्न जगहों पर किये जायें और वहाँ विभिन्न लोगों को बुलाकर उनके सामने ये आँकड़े रखें । **आखिर आज भी टीवी से कई गुना ज्यादा प्रत्यक्ष सत्संग का परिणाम होता है ।** सत्य और मजबूत होगा । इस लड़ाई के लिए मीडिया में और अच्छे लोगों की जरूरत है, 'सुदर्शन' जैसे कई चैनलों की आवश्यकता है । हमको भी कई पत्रकारों की जरूरत है । अच्छे लोग पत्रकारिता में आयें क्योंकि गंदगी को साफ करने का एक तरीका है कि उस पर ज्यादा अच्छा पानी डालो तो गंदगी दूर हो जायेगी ।

पिछले ८ वर्षों से 'वेलेंटाइन डे' को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाने से तमाम महँगे-महँगे गिफ्ट्स, ग्रीटिंग कार्ड्स बेचनेवाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के व्यापार पर इसका असर हुआ है। और यहाँ बात केवल बापूजी की नहीं है, तमाम साधु-संतों की है। मैं दावा कर सकता हूँ कि अगर यह लड़ाई आपने नहीं जीती तो साधु-संतों के बाद ऐसा सामाजिक कार्यकर्ता जो स्वदेश और देश-धर्म की बात करता है उसका नम्बर लगना तय है। आज बापूजी हैं, कल आप और हम हैं।

इस धरने से अथवा बापूजी के बाहर आने के बाद यह लड़ाई खत्म हुई, ऐसा नहीं है। अब यह लड़ाई शुरू हो चुकी है और यह लड़ाई तब तक जारी रहनी चाहिए, जब तक इस देश के खिलाफ षड्यंत्र खत्म नहीं होता। इस देश में पहली बार ऐसा हुआ है कि किन्हीं संत पर कार्यवाही हुई और उनके लाखों भक्त सड़कों पर आये हैं।

बापूजी बेदाग हैं, पाक हैं

-महामंडलेश्वर सूर्यानंद सरस्वतीजी, महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति, हरियाणा

परम आदरणीय, श्रद्धेय, वेदांतनिष्ठ पूज्य बापूजी महाराज समत्व भाव से उस परम पिता परमात्मा का संदेश, उस प्रेम का संदेश भारत के कोने-कोने में जाकर जनता-जनार्दन को देते हैं। ऐसे बापूजी के ऊपर किसी भी प्रकार का आरोप यह संत-समाज कहता है बेबुनियाद है। जितने भी तथाकथित तथ्य हम सुन रहे हैं, देख रहे हैं, मीडिया में जो बातें उछाली जा रही हैं, उनमें से एक भी सत्य नजर नहीं आती है। संत-समाज आज पूरे विश्व को यह बताना चाहता है :

साधु-संतों का अपमान,
नहीं सहेगा हिन्दुस्तान !

यह एक बापूजी का अपमान नहीं, पूरे संत-समाज का अपमान है। जो समझ रहे हैं कि 'यह हमारा कर्तव्य नहीं, हमें इसमें शामिल नहीं होना चाहिए' तो अगर इसी प्रकार सब कुछ होता रहा तो वह दिन दूर नहीं कि एक-एक करके ये आरोप लगभग सबके ऊपर हो जायेंगे। अतः इसको हमें दूर हटाना है, इसका सामना करना है।

महापुरुषों ने कहा है :

वो पथ क्या पथिक कुशलता ही क्या,
जिसके मार्ग में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य-परीक्षा ही क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो ॥

एकता में बहुत शक्ति है, संगठन में बहुत शक्ति है। सभी संन्यासी, दसनामी, नाथ सम्प्रदाय, उदासीन सम्प्रदाय किसी भी सम्प्रदाय के महापुरुष हों, बापूजी को अपना मानते हैं। अब सब संत एकजुट होकर ललकारेंगे और उसके बाद किसी प्रकार का दुष्प्रचार नहीं होने दिया जायेगा।

बापूजी बेदाग हैं, पाक हैं। इस सत्य की रक्षा के लिए जन-जन को आगे आना पड़ेगा। अनुकूल स्थिति में बापूजी के प्रवचन कोई भी सुन सकता है, आनंद से झूम सकता है पर ऐसी स्थिति में भी जो साथ दे वही सच्चा संस्कृतिप्रेमी है। विपदा में साथ छोड़ देना गद्दारों का काम है।

डॉ. सुमन (भूतपूर्व पादरी रॉबर्ट सॉलोमन, इंडोनेशिया) :

धर्मांतरण करनेवाले लोग हमारे पूजनीय बापूजी के खिलाफ साजिश कर रहे हैं। आज समय की माँग है ऊँच-नीच, भेदभाव को समाप्त करके समर्थ हिन्दू समाज का निर्माण !

आपने हमारे आशारामजी बापू को दोषी कैसे कहा ?

– महामंडलेश्वर आचार्य श्री सुनील शास्त्रीजी महाराज

हमारे हृदय में विराजमान नारायणस्वरूप आशाराम बापूजी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन ! मैं आज संत के रूप में नहीं लेकिन भारत माता का एक पुत्र और एक नागरिक होने के नाते पूर्णतः बिके हुए कुछ लोगों से सवाल करना चाहूँगा कि जब संविधान हमें कहता है कि जब तक दोष साबित न हो जाय तब तक उसे दोषी न माना जायेगा तो आपने हमारे आशारामजी बापू को दोषी कैसे कहा ? यह भारत के संविधान की अवमानना है। ६ करोड़ अनुयायियों के दिलों में तलवार घोंपना - क्या यह भारत के संविधान की हत्या नहीं है ? इन हत्यारों की माता भी इनको पैदा करके अपनी कोख पर शर्माती होगी कि मैंने कैसे पुत्र को जन्म दिया !

और दूसरी बात, दिल्ली में एफआईआर हुई और आयी जोधपुर में। लेकिन जोधपुर पुलिस के बहुत बड़े अधिकारी, जिन्होंने संविधान की शपथ ली है, उन्होंने प्रेसवार्ता में कहा कि ''लड़की की एफआईआर एवं उसकी मेडिकल जाँच रिपोर्ट में बलात्कार की पुष्टि नहीं होती है। इसलिए बापू को बलात्कार की धारा से मुक्त किया जाता है।'' लेकिन ६ घंटे के अंदर वह संविधान की कसम खानेवाला अधिकारी पलटता क्यों है ?

जगद्गुरु जयेन्द्र सरस्वती पर भी आपने आरोप लगाया, सर्वोच्च न्यायालय में वे निर्दोष साबित हुए। क्यों नहीं मीडिया ने दिखाया ? आज तक आपने माफी क्यों नहीं माँगी ? और हमारे संत-समाज का बहुत बड़ा संघ है। ये 'शांति-शांति-शांति...' कहते हैं इसलिए इनको इतना 'शांत' मत समझो, 'क्रांति... क्रांति... !' मैंने २००८ में भी कहा था कि बापू निष्कलंक हैं, निर्दोष हैं, बापूजी भारत माता के सच्चे सपूत और संत-समाज के शिरोमणि हैं।

ये 'रेप केस, रेप केस...' सुनते-सुनते मेरा कान पीड़ित हो गया है। मैं पूछना चाहता हूँ कि भारत के संविधान के अनुच्छेद २५, २६ 'धर्म स्वतंत्रता का अधिकार' के अंतर्गत कि आज कुछ नेता लोग अनर्गल बात कर रहे हैं लेकिन उनकी पार्टी के कितने लोगों पर पहले मुकदमे चल रहे हैं, उनको क्यों नहीं वे फाँसी पर चढ़ा रहे हैं ! उस व्यक्ति को पहले फाँसी पर क्यों नहीं चढ़ा रहे हो जो संविधान की कसम खाकर उसकी अवमानना कर रहा है ? लेकिन हमको बेचारा मत समझो। और 'बलात्कार-बलात्कार...' जैसे दोषारोपण मीडिया बापूजी पर किसलिए करती है ? हमें एक बहुत बड़े चैनल के अध्यक्ष ने कहा कि यह सब टीआरपी का खेल है। इनके पेट की नाभि क्या है ? टीआरपी। और देश के कुछ बिके हुए गद्दार करोड़ों रुपये देकर मीडिया को खरीदते हैं।

बापूजी का अपमान समाज का अपमान है

– श्री लक्ष्मी नारायणजी (दायमा), केन्द्रीय मार्गदर्शक, 'विश्व हिन्दू परिषद'

पूज्य बापूजी ने अपने जीवन की पूरी शक्ति, अपनी पूरी आध्यात्मिक शक्ति इस समाज को खड़ा करने के लिए लगा दी है। अब समाज इस शक्ति का सदुपयोग करे और कहे कि बापूजी ! अब हम आपका अपमान सहन नहीं करेंगे, नहीं होने देंगे। आपका अपमान समाज का अपमान है।

✻ जब हमारे हृदय में भगवान के ज्ञान को पाये हुए अनुभव-सम्पन्न महापुरुषों के प्रति सद्भाव होता है और उनकी कृपा, नूरानी निगाहें मिलती हैं तो हमको भगवद्रस आने लगता है, जिससे संसार का रस फीका लगने लगता है। भक्ति में से भक्तियोग हो जाता है। **– पूज्य बापूजी**

प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी द्वारा सोशल मीडिया पर प्रचारित किये गये

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

१) घेराबंदी से ग्रस्त हिन्दुओ ! झूठे आरोपों व कुप्रचार के माध्यम से तुम्हारे मार्गदर्शक व संत योजनाबद्ध रीति से समाप्त कर दिये जायेंगे । जब तक यह बात तुम्हारी समझ में आयेगी, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। अतः सावधान !

२) धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में आशाराम बापू सबसे आगे हैं।

३) हिन्दू-विरोधी एवं राष्ट्र-विरोधी ताकतों के गहरे षड्यंत्रों को और हिन्दू संतों को बदनाम करने के उनके गुप्त हथकंडों को सीधे व भोले-भाले हिन्दू नहीं देख पा रहे।

४) पूर्व में काँची मठ के शंकराचार्यजी को हत्या के झूठे आरोपों के तहत गिरफ्तार किया गया एवं मीडिया ने भी उनको कातिल ही प्रचारित किया। जब उनको निर्दोष छोड़ा गया तो किसी मीडिया प्रतिष्ठान ने उन्हें कातिल कहने के लिए कोई क्षमायाचना नहीं की।

५) साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर एक भी सबूत व बिना चार्जशीट के पिछले ६ वर्षों से जेल में पड़ी हैं केवल इसलिए कि वे हिन्दू साध्वी हैं।

६) सबसे खराब बात यह है कि धर्म-निरपेक्ष-हीनभावना के शिकार अधिकांश हिन्दू जो भी मीडिया कहता है, उसे तुरंत सत्य मान लेते हैं। कोई सबूत नहीं, कोई जाँच नहीं, कोई दोषी सिद्ध करना नहीं - अचानक सभी लोग जज बन जाते हैं क्योंकि मीडिया और फिल्मों ने हमारे दिमागों में कूट-कूटकर भर रखा है कि अगर कोई हिन्दू संत है तो वह अवश्य ही भ्रष्ट और विकृत है।

चल पड़ा 'संस्कृति-विरोधी चैनल लॉक अभियान'

न्यूजपोस्ट, २२ सितम्बर । झूठी खबरें दिखाकर देशवासियों को भ्रमित करनेवाले तथा करोड़ों संस्कृतिप्रेमियों की भावनाओं को आहत करनेवाले टीवी चैनलों पर लगाम लगाने के लिए विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक संगठनों द्वारा देशव्यापी 'संस्कृति-विरोधी चैनल लॉक अभियान' चलाया गया है, जिसमें उन्होंने चैनल लॉक करने की विधि इस प्रकार बतायी है :

Dish TV : Menu – Press Right Key – My Dish TV – Parental Control – Block Channels – PIN – 1234 – Select the Channel – Press right key to Block channel – Select channel one by one – Menu

Tata Sky : Organiser – Parental control – PIN – 0000 – Channel Lockout – Select the Channel – Guide

Airtel / BIG TV (Reliance) : Home/Menu – Setting/Setup – Parental Control – Pin – 0000 – Parental Lock/Channel block – Select Channel – नीला बटन दबाकर apply changes करें - home

Videocon : Menu – Setup – Installation – Pin -1234 – user setting – Channel Locking – Lock/Hide/Unlock/Unhide channels – Green button for hide – Ok – Exit - Yes

IN/DEN/PNL Cable : Menu – Favourite List – Modify Channel List – All TV Channel – Lock – Red Button (लॉक करने के लिए)

चैनल लॉकिंग में समस्या आये तो किसी जानकार से सम्पर्क कर चैनल लॉक करने हेतु कहा गया है।

सही खबरों के लिए 'A2Z' व 'सुदर्शन' आदि न्यूज चैनलों को देखने का आह्वान किया गया है।

देवैरा सत्सि बर्हिषि । 'हे प्रभो ! आप दिव्यताओं के साथ हमारे हृदय-मंदिर में विराजिये ।' (ऋग्वेद)

आयी गुरुज्ञान की दिवाली...

- पूज्य बापूजी

(दीपावली पर्व : १ से ५ नवम्बर)

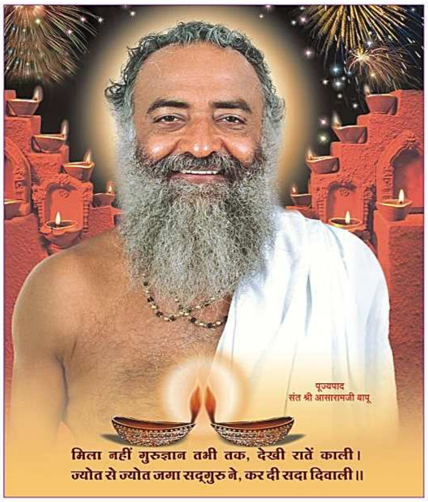

धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दिवाली, नूतन वर्ष, भाईदूज - पाँच पर्वों का पुंज है दीपावली उत्सव । चार महारात्रियों में दिवाली एक महारात्रि है। अँधेरी अमावस्या में उजाला करनेवाली यह 'दिवाली' संदेश देती है कि जीवन में कितनी भी अँधेरी समस्याएँ आयें लेकिन उनको जाननेवाले आत्म-उजाले का प्रकाश अपने जीवन में जगमगाना चाहिए।

और उत्सव तो दिन में होते हैं लेकिन दिवाली, शिवरात्रि, जन्माष्टमी और होली का उत्सव रात में मनाया जाता है । ये चार महारात्रियाँ दुःख, दरिद्रता, शोक हर के भगवान का प्रसाद देनेवाली रात्रियाँ मानी गयी हैं। नरक चतुर्दशी को कालरात्रि भी कहते हैं। इन रात्रियों में किये गये शुभ कर्म, साधन-भजन, जप-ध्यान हजारों गुना अधिक प्रभावशाली होते हैं। और जो इन रात्रियों में सम्भोग करता है, उसका आयुष्य और स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, उसे विकलांग संतान होती है और विषय-विकार में गिरनेवालों को जीवनभर चिपकनेवाले रोग पकड़ लेते हैं। इन रात्रियों में विषय-विकारों से, स्त्री-पुरुष के स्पर्श व सहवास से बचना चाहिए और भगवद्भजन में लगना चाहिए।

पाँच पर्वों की लड़ी, लाये जीवन में आनंद की झड़ी

धनतेरस : यह पर्व धन्वंतरि महाराज द्वारा प्रणीत आरोग्य के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाकर सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहने का संकेत देता है । इस दिन दीपदान करने से अकाल मृत्यु नहीं होती।

नरक चतुर्दशी : इस दिन कोई गलती से भी सूरज उगने के बाद उठता है तो वर्षभर के उसके पुण्यों का प्रभाव, सत्कर्मों का प्रभाव कम हो जायेगा । लेकिन सूर्योदय से पहले उठ जाता है और सूर्योदय से कुछ क्षण पहले तिल के तेल की मालिश करके स्नान कर लेता है तो उसके सत्त्व की अभिवृद्धि होगी।

जैसे स्नान नहीं करते तो शरीर मलिन हो जाता है, ऐसे ही अगर नरक चतुर्दशी को कोई मंत्रजप नहीं करता तो मंत्र मलिनता को प्राप्त होता है, मंत्र का प्रभाव कम हो जाता है। अगर इस दिन मंत्रजप करता है तो मंत्र में चेतना बढ़ जाती है, मंत्र की सिद्धि होती है। इस दिन सरसों के तेल अथवा घी का दीया जलाकर काजल बनायें। यह काजल लगानेवाले व्यक्ति को नजर नहीं लगती, नेत्रज्योति बढ़ती है और भूत-बाधा भाग जाती है ऐसा लिखा है।

इस दिन नरक के भय से बचने के लिए धर्मराज के नाम - 'यम, धर्मराज, मृत्यु, वैवस्वत, अंतक, काल तथा सर्वभूतक्षय' इनका उच्चारण कर तर्पण तथा दीपदान करना चाहिए। **(भविष्य पुराण)**

दीपावली : जिस धन से भोग, आलस्य, दुराचार आये, वह धन वित्त है। लेकिन जिस धन से सुख-वैभव आये वह अपने और अपने जाति-सम्प्रदाय के लिए सम्पत्ति है। जिससे पड़ोस, परिवार, दीन-दुःखी और संस्कृति की सेवा हो वह वित्त नहीं, लक्ष्मी है। और जिस धन से परमात्मा के सत्संग में जाने की सुविधा बने, आत्मज्ञानियों के दर्शन करने का अवसर मिले, आत्मधन पाने का रास्ता खुले, वह धन न वित्त है, न

निर्दोष, निष्कलंक बापू

– श्री निलेश सोनी (वरिष्ठ पत्रकार), प्रधान सम्पादक, 'ओजस्वी है भारत !'

किसीने ठीक ही लिखा है कि हिन्दू तो वह बूढ़े काका का खेत है, जिसे जो चाहे जब जोत जाय। उदार, सहिष्णु और क्षमाशील इस वर्ग के साथ वर्षों से बूढ़े काका के खेत की तरह बर्ताव हो रहा है। हिन्दू समाज का नेतृत्व करनेवाले ब्रह्मज्ञानी संतों, महात्माओं, समाज-सुधारकों, क्रांतिकारी प्रखर वक्ताओं पर जिसके मन में जो आता है, वह कुछ भी आरोप मढ़ देता है। अब तो दुष्प्रचार की हद हो गयी, जब ७३ वर्षीय पूज्य संत श्री आशारामजी बापू पर साजिशकर्ताओं की कठपुतली, मानसिक असंतुलन वाली कन्या द्वारा ऐसा घटिया आरोप लगवाया गया, जिसका कोई सिर-पैर नहीं, जिसे सुनने में भी शर्म आती है। इससे देश-विदेश में फैले बापूजी के करोड़ों भक्तों व हिन्दू समाज में आक्रोश का ज्वालामुखी सुलग रहा है।

कुदरत के डंडे से कैसे बचेंगे ?

आरोप लगानेवाली लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट में चिकित्सकों ने आरोप को साफ तौर पर नकार दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि यह सिर्फ बापूजी को बदनाम करने की सोची-समझी साजिश है लेकिन प्रश्न यह है कि करोड़ों भक्तों के आस्था के केन्द्र बापूजी के बारे में अपमानजनक एवं अशोभनीय आरोप लगाकर भक्तों की श्रद्धा, आस्था व भक्ति को ठेस पहुँचानेवाले कुदरत के डंडे से कैसे बच पायेंगे ? शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि 'भगवान स्वयं का अपमान सहन कर सकते हैं मगर अपने प्यारे तत्त्वस्वरूप संतों का नहीं।'

व्यावसायिक हितों की चिंता

इन झूठे, शर्मनाक आरोपों के मूल में वे शक्तियाँ काम कर रही हैं, जो यह कतई नहीं चाहती हैं कि बापूजी की प्रेरणा से संचालित गुरुकुलों के असाधारण प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी आगे चलकर देश, संस्कृति व गुरुकुल का नाम रोशन करें। दुनिया जानती है कि भारतीय वैदिक गुरुकुल परम्परा पर आधारित शिक्षण एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में बापूजी के मार्गदर्शन में देशभर में चल रहे गुरुकुल आज कॉन्वेंट शिक्षण पद्धति के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुके हैं। एक तरफ कई व्यावसायिक संस्थाओं की लूट इस पहाड़ के नीचे आ रही है तो दूसरी तरफ इंटरनेट और अश्लील साहित्य सामग्री के जरिये देश के भविष्य को चौपट करने की सुनियोजित साजिश पर पानी फिर रहा है। ओजस्वी-तेजस्वी भारत निर्माण के बापूजी के संकल्प को हजम कर पाना उन साजिशकर्ताओं के लिए अब काँटोंभरी राह साबित हो रहा है। ऐसे में गुरुकुलों की बढ़ती लोकप्रियता, विश्वसनीयता की छवि और मेधावी बच्चों की प्रतिभा को कुचलने के लिए अब कुछ इस तरह से कीचड़ उछाला जा रहा है कि माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुल में भेजें ही नहीं।

पहले गुरुकुल के बच्चों पर तांत्रिक विद्या का मनगढ़ंत आरोप लगाया गया परंतु जब सर्वोच्च न्यायालय में इन आरोपों की हवा निकल गयी तो अब सीधे बापूजी के चरित्र पर ही कीचड़ उछालने लगे हैं। मगर सूर्य पर थूँकने का दुस्साहस करनेवाले खुद ही गंदे हो जाते हैं। जो समाज को मान-अपमान, निंदा-प्रशंसा और राग-द्वेष से ऊपर उठाकर समत्व में प्रतिष्ठित करते हुए समत्वयोग की यात्रा करवाते हैं, भला ऐसे संत के दुष्प्रचार की थोथी आँधी उनका क्या बिगाड़ पायेगी ? टीआरपी के पीछे दौड़नेवाले चैनल बापू को क्या बदनाम कर पायेंगे ? बापू के भक्तों की हिमालय-सी दृढ़ श्रद्धा के आगे आरोप की बिसात एक तिनके के समान है।

चाहे धरती फट जाय तो भी सम्भव नहीं

वैसे आज किसी पर भी कीचड़ उछालना बहुत आसान है। पहले बापूजी के आश्रम के लिए जमीन

हड़पने, अवैध कब्जे, गैर-कानूनी निर्माण के थोकबंद आरोप लगाये गये मगर सत्य की तराजू पर सभी झूठे, बेबुनियाद साबित हुए । जब इनसे काम नहीं बना तो बापूजी और उनके द्वारा संचालित आश्रम, समितियों और साधकों पर अत्याचार किये गये लेकिन भक्तों ने इनका डटकर मुकाबला किया । साजिश करनेवालों ने हर बार मुँह की खायी । कितने तो आज भी लोहे के चने चबा रहे हैं तो कितने कुदरत के न्याय के आगे खामोश हैं परंतु बावजूद इसके आज भी बापूजी के ऊपर अनाप-शनाप आरोप लगवानेवालों को अक्ल नहीं आयी । साजिशकर्ताओं के इशारे पर बकनेवाली एक लड़की ने बापूजी पर जैसा आरोप लगाया है, दुनिया इधर-की-उधर हो जाय, धरती फट जाय तो भी ऐसा सम्भव नहीं हो सकता है । यह घिनौना आरोप भक्तों की श्रद्धा, साधकों की आस्था को डिगा नहीं सकता है ।

पूरा जीवन खुली किताब

बापूजी का पूरा जीवन खुली किताब की तरह है । उसका हर पन्ना और उस पर लिखी हर पंक्ति समाज का युग-युगांतर तक पथ-प्रदर्शन करती रहेगी । बापूजी कोई साधारण संत नहीं, वे असाधारण आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष हैं ।

दरअसल सबसे बड़ी समस्या यह है कि सारे आरोप हिन्दू संतों पर ही लगाये जाते हैं क्योंकि हिन्दू चुपचाप सब सह लेता है । दुनिया के और किसी धर्म में ऐसा होने पर क्या होता है यह किसीसे छुपा नहीं है । हमारी उदारता और सहिष्णुता का दुरुपयोग किया जाता है । तभी तो महापुरुषों को बदनाम करने का षड्यंत्र चलता ही रहा है, फिर चाहे कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी हों या फिर सत्य साँईं बाबा हों । आरोप लगानेवालों ने तो माता सीताजी व भगवान श्रीकृष्ण पर भी लांछन लगाया था । ऐसे में यह कल्पना कैसे की जा सकती है कि समाज को संगठित कर दिव्य भारतीय संस्कृति की विश्व-क्षितिज पर पताका लहरानेवाले विश्ववंदनीय संत पर आरोप न लगाये जायें ? संत तो स्वभाव से ही क्षमाशील होते हैं लेकिन उनके भक्त अपमान बर्दाश्त करनेवाले नहीं हैं । झूठ के खिलाफ सत्य की यह धधकती मशाल अन्याय और अत्याचार के अँधेरे को कुचलकर ही रहेगी ।

पुण्यदायी तिथियाँ

२२ अक्टूबर : मंगलवारी चतुर्थी (प्रातः ७-०८ से २३ अक्टूबर सूर्योदय तक)

२७ अक्टूबर : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से शाम ७-१४ तक)

३० अक्टूबर : रमा एकादशी (सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करनेवाला व्रत), ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस

१ नवम्बर : धनतेरस, यम दीपदान

२ नवम्बर : नरक चतुर्दशी, तैलाभ्यंग स्नान

३ नवम्बर : दीपावली

४ नवम्बर : बलि प्रतिपदा (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से आधा)

१० नवम्बर : गोपाष्टमी

११ नवम्बर : ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण दिवस, अक्षय-आँवला नवमी

१३ नवम्बर : देवउठी-प्रबोधिनी एकादशी (महापुण्यप्रद और महापातकों की नाशक)

१६ नवम्बर : वैकुंठ चतुर्दशी, विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर ११-५० तक)

मानव-समाज का प्रकाश-स्तम्भ

ब्रह्मलीन मातुश्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : ३० अक्टूबर

वे परम सौभाग्यशालिनी माताएँ कैसी रही होंगी, जिन्होंने अपनी उँगली पकड़ाकर जगदाधार को चलना सिखाया होगा ! जगत के पालक को दूध पिलाया होगा और उस परम प्रेमदाता को गले से लगाकर वात्सल्य लुटाया होगा ! कैसी होंगी माँ कौसल्या जिन्होंने भगवान राम को जन्म दिया ! कैसी होंगी माता यशोदा जिनकी गोद में भगवान कृष्ण खेले होंगे ! कैसी होंगी माँ देवहूति जिन्होंने कपिल मुनि को बोलना सिखाया होगा ! इनको तो हमने नहीं देखा किंतु इस युग में हम दर्शन हुए ऐसी ही परम सौभाग्यशालिनी, वात्सल्यमूर्ति माँ महँगीबाजी के, जिनकी गोद में सबके प्यारे बापूजी अवतरित हुए।

सारा समाज ऋणी है उनका, जिन्होंने हमको ऐसे समर्थ सद्गुरु दिये। अनंत-अनंत प्रणाम हैं उन पूजनीया संत-माता 'महँगीबाजी' को, जिन्होंने अपने पुत्र में भगवद्बुद्धि, गुरुबुद्धि की। उन्होंने अपना जीवन तो धन्य कर ही लिया, दूसरों के लिए भी एक प्रेरणा-ज्योति बन गयीं।

एक बार की बात है। एक आश्रमवासी साधक गुरुपूर्णिमा के अवसर पर अम्माजी (माँ महँगीबाजी) के दर्शन करने गया। वह प्रणाम करके उनके श्रीचरणों में बैठ गया। अम्माजी ने उसका हालचाल पूछा।

बातचीत के दौरान उसने कहा : ''अम्मा ! आज गुरुपूर्णिमा है इसलिए आश्रम में बहुत भीड़ है। गुरुदेव सत्संग करके आज थोड़ी देर से आयेंगे।''

अम्माजी ने उसे चुप रहने का इशारा करते हुए कहा : ''गुरुदेव गये थोड़े ही हैं जो देर से आयेंगे ! वे अपनी कुटिया में ही हैं, कहीं नहीं गये हैं।''

तब उसका हृदय भाव से भर गया। उसे रामायण का वह प्रसंग याद आ गया कि भगवान रामजी तो वनवास में थे और अयोध्या में प्रातः ब्राह्ममुहूर्त के समय माँ कौसल्या रामजी के कमरे का दरवाजा खटखटाती हैं और कहती हैं : ''राम ! उठो, भोर हो गयी। राम बेटा ! जागो।'' बार-बार पुकारने की आवाज सुनकर दूसरे कमरे से सुमित्रा माता आ गयीं।

माँ कौसल्याजी की भावपूर्ण स्थिति को देख सुमित्राजी भी गद्गद हो गयीं। उन्होंने पूछा : ''दीदी ! आप किसको उठा रही हो ?''

कौसल्याजी : ''देखो न, भोर हो गयी। अभी तक राम उठकर बाहर नहीं आया।''

सुमित्राजी : ''दीदी ! उनको तो वनवास में गये कितने वर्ष बीत गये !''

कौसल्याजी : ''मैं आँखों से देखी बात सच मानूँ कि कानों से सुनी हुई ? मैंने अपनी आँखों से देखा, राम अंदर गया है।''

कैसा प्रेम था कौसल्याजी का ! वे रामजी को अपने से दूर नहीं मानती थीं। ऐसा ही दिव्य प्रेम पूज्य बापूजी की मातुश्री माँ महँगीबाजी का था। सुंदर समाज के निर्माण के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ बनीं पूजनीया अम्माजी को बारम्बार प्रणाम !

लक्ष्मी है, वह 'महालक्ष्मी' है, महा अनुभव को प्रकटानेवाली है।

दिवाली की रात में लक्ष्मीजी की प्रसन्नता के लिए जपने योग्य खास मंत्र है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा।

यह मंत्र 'देवी भागवत' में दिया गया है। एक बीजमंत्र भी बहुत ताकत रखता है, इसमें तो पाँच बीजमंत्र एक साथ हैं। दिवाली के दिन इस मंत्र की सिद्धि होती है। लक्ष्मीजी बोलती हैं कि मेरी साधना से जो धन-सम्पत्ति मिली वह रावण को भी छोड़नी पड़ती है, कुबेर को भी छोड़नी पड़ती है लेकिन **आत्मज्ञान की जो धन-सम्पदा है, वह शाश्वत है।**

अतः स्वास्थ्य के लिए थोड़ा जप करें, अपनी-अपनी समस्याओं की निवृत्ति के लिए भले थोड़ा जप कर लें लेकिन बाकी भगवान की प्रीति के लिए, भगवान के ज्ञान के लिए, भगवान में सम रहने के लिए जप करें। **जो नारायण की प्रसन्नता चाहता है उसे लक्ष्मीप्राप्ति के लिए गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता । मैंने कभी लक्ष्मीप्राप्ति का जप नहीं किया। मुझे बस परमात्मा मिले इस भाव से यात्रा की। लक्ष्मी तो बिना बुलाये आ गयी।**

नूतन वर्ष : भीष्म पितामह मरणशय्या पर थे, इतना कीमती वक्त था, उस समय युधिष्ठिर को कहते हैं कि वर्ष के प्रथम दिन जो हर्ष, उल्लास, आनंद और ईश्वरभाव से जीता है, वह वर्षभर उन्हीं सद्भावों से सम्पन्न रहता है । और जो ग्लानि, मलिनता या 'मैं दुःखी हूँ, मैं परेशान हूँ, मैं ऐसा हूँ - मैं वैसा हूँ' के नकारात्मक विचार करके अपने या दूसरे को कोसता है, वह वर्षभर उन्हीं विचारों की खाई में उलझता रहता है। इसलिए दिवाली की रात को सोने के पहले 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं । जैसे बच्चा माँ की गोद में आनंदित रहता है, ऐसे हम आपके पास आनंदित हैं, उल्लसित हैं। ॐ... ॐ... ॐ...' - ऐसा करते-करते भगवान में शयन करने की भावना करना और सुबह भगवान की गोद से उठे हैं, ऐसी भावना करना तो आप प्रसन्नवदन होंगे, प्रसन्नमन होंगे । वर्ष का प्रथम दिन प्रसन्न रहेगा, स्वस्थ रहेगा तो वर्षभर प्रसन्नता और स्वास्थ्य आपकी छाया हो जायेगी।

अशोक और नीम के तोरण (बंदनवार) के नीचे से गुजरकर जाने से वर्षभर रोगप्रतिकारक शक्ति बनी रहती है। वर्ष के प्रथम दिन आप भी अपने घरों में तोरण बाँधो तो अच्छा है । इस दिन बछड़े को दूध पिलाती गाय, गाय के घी, दही, शहद, तुलसी, हीरे, भगवान के रास्ते जानेवाले साधक, भक्त एवं संतों का दर्शन शुभ माना जाता है और ब्रह्मज्ञानी गुरुओं का दर्शन-चिंतन तो भाई ! महाशुभों की खान है। मेरे को ब्रह्मज्ञानी गुरु के दर्शन हुए तो इतना शुभ हुआ कि वह बाँटते-बाँटते ५० साल हो गये लेकिन रत्तीभर भी कम नहीं हुआ।

भाईदूज : यमराज ने अपनी बहन यमी से कहा था कि 'आज के दिन जो बहन भाई को तिलक कर उसे त्रिलोचन बनाने का सत्संकल्प करेगी और जो भाई बहन के यहाँ भोजन करेगा अथवा बहन का चित्त प्रसन्न करके उसकी कठिनाइयों को अपनी कठिनाई मानकर उनकी निवृत्ति करने में लगेगा, वह यम-पाश से मुक्त हो जायेगा ।' भाईदूज, पड़ोस की बहन या भाई के प्रति परस्पर सद्भाव और अपने भाई के लिए त्रिलोचन का भाव, अपनी बहन के लिए उन्नत भाव करके भावों के आधारस्वरूप परमात्मा में पहुँचने में सहायक होनेवाला पर्व है।

दिवाली संदेश

लौकिक दिवाली आप मनाओ, मेरी मना नहीं है, खूब उत्साह से मनाओ । लौकिक दिवाली आपकी सुरक्षित हो, आनंदित हो, उसमें तो मैं भागीदार हूँ लेकिन लौकिक दिवालियाँ मना-मनाकर ६०-७० साल के बाद आप चल पड़ें और फिर ८४ लाख योनियों में आपको भटकना पड़े - यह मैं देखना नहीं चाहता हूँ, सुनना भी नहीं चाहता हूँ, सोचना भी नहीं चाहता हूँ। इसलिए आध्यात्मिक दिवाली मनाने की तरकीब सीख लो । दिवाली में घर की सफाई बेशक करो लेकिन हृदय की सफाई भी करो। किसीसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, बदले की गाँठ मत बाँधो। नयी चीज लाओ अर्थात्

(शेष पृष्ठ २२पर)

इस आसन में शरीर की स्थिति ऐसी दिखती है जैसे कोई धनुष की प्रत्यंचा को कान तक खींचकर लक्ष्य को बेधना चाहता हो, इसलिए इस आसन का नाम 'आकर्ण धनुरासन' है।

लाभ : (१) विद्यार्थियों तथा अधिक लेखन-कार्य करनेवालों के लिए यह आसन वरदानस्वरूप है । (२) हाथ-पैर व गर्दन के जोड़ों तथा स्नायु और मेरुदंड का उचित व्यायाम हो जाता है और वे सशक्त बनते हैं तथा शरीर लचीला होता है । (३) पेट और सीने का हलका व्यायाम होता है तथा उनके दोष दूर होते हैं । (४) खाँसी, दमा और क्षय (टी.बी.) में लाभ होता है। (५) फेफड़े मजबूत बनते हैं और सीने का विकास होता है । (६) कमर का दर्द, गले की तकलीफ, अपच, कब्ज, बगल (काँख) की ग्रंथि, संधिवात, पैरों की पीड़ा आदि में लाभ होता है । (७) स्त्रियों की मासिक धर्म की अनियमितता, गर्भाशयसंबंधी शिकायतें और पेडू की पीड़ा दूर होती है।

विधि : यह आसन दो तरह से किया जाता है।

प्रथम प्रकार : जमीन पर पैर सीधे फैलाकर बैठ जायें। फिर बायें हाथ से दायें पैर का अँगूठा और दायें हाथ से बायें पैर का अँगूठा पकड़ें । दायें हाथ की कुहनी को धीरे-धीरे पीछे की ओर खींचते हुए बायाँ पैर मोड़कर उसके अँगूठे को दायें कान तक ले आयें । हाथ की मुड़ी हुई कुहनी सिर के ऊपर की ओर होनी चाहिए । दायाँ पैर सीधा रहे। श्वास कुछ देर रोककर धीरे-धीरे छोड़ें । इसी प्रकार दूसरे पैर से भी करें ।**सावधानी** : यदि पैर, कूल्हे और पेट में किसी प्रकार का गम्भीर रोग हो तो इस आसन को न करें। (क्रमशः)

***

(पृष्ठ २१ 'आयी गुरुज्ञान...' का शेष) सुख-दुःख में भगवान के साथ संबंध जोड़कर सुख-दुःख को साधन बना लो । मिठाई खाओ और खिलाओ अर्थात् प्रसन्न रहो और प्रसन्नता दो । और दीये जलाना - अपने जीवन में ज्ञान के दीये भी जलाओ । इस प्रकार लौकिक दिवाली में गुरुओं की दिवाली मिला दो तो तुम्हारी रोज दिवाली, जहाँ जाओ वहाँ दिवाली !

सुख चैन अमन सौगात लिये,
आयी गुरु ज्ञान की दिवाली ।
सहज सरल सुमधुर जीवन,
अंतर भय-भेद से हो खाली ॥
मन मंदिर में ज्योति जगे,
तम अँधियारा दूर भगे ।
ॐ शिवोऽहं नाद बजे,
चित चेतना झूमे मतवाली ॥
तुम्हारी हर रोज हो दिवाली...

(दीपावली पर लक्ष्मीप्राप्ति की साधना-विधि के लिए आश्रम से प्रकाशित 'सदा दिवाली' और 'पर्वों का पुंज : दीपावली' पुस्तकें पढ़ें।)

***

*** ज्ञान के कठिन मार्ग पर चलते वक्त आपके सामने जब भारी कष्ट एवं दुःख आयें तब आप उन्हें सुख समझो क्योंकि इस मार्ग में कष्ट एवं दुःख ही नित्यानन्द प्राप्त करने में निमित्त बनते हैं । अतः उन कष्टों, दुःखों और आघातों से किसी भी प्रकार साहसहीन मत बनो, निराश मत बनो । सदैव आगे बढ़ते रहो । जब तक अपने सत्यस्वरूप को यथार्थ रूप से न जान लो, तब तक रुको नहीं ।**

(आश्रम से प्रकाशित 'जीवन रसायन' पुस्तक से)

सुख की लोलुपता आदमी को दोषी बना देती है ।

समाज की देख पीड़ा, संत ने उठाया बीड़ा

पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस ११ नवम्बर

अपनी आत्ममहिमा में जगे महापुरुषों की हस्ती-मस्ती का वर्णन ही नहीं किया जा सकता । आत्मज्ञान की ऊँचाइयों को प्राप्त करने के बाद उनके लिए इस संसार में न कुछ पाना शेष होता है, न कुछ जानना । फिर भी वे करुणासिंधु महापुरुष करुणा करके समाज के बीच रहते हैं, लोगों के पाप-ताप व दुःखों को हरकर उन्हें आत्मज्ञान की सघन, शीतल छाया देते हैं। परहित के लिए वे अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देते हैं।

जैसे बच्चे की पीड़ा माँ से सहन नहीं होती ऐसे ही लोक-मांगल्य में सदैव रत रहनेवाले महापुरुषों से किसीका दुःख सहन नहीं होता । त्रिलोकहितैषी, निष्काम कर्मयोग के मूर्तिमंत स्वरूप भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज भी ऐसे ही लोकसंत थे। उनकी प्रत्येक चेष्टा समष्टि के हित के लिए ही थी। उनकी परोपकारमयी समाजहित की भावना को याद करके पूज्य बापूजी बताते हैं : ''१९३०-४० की बात है। मेरे गुरुजी उत्तरकाशी में रहते थे । वहाँ राजा ने कच्चा-पक्का पुल बनवाया था, बाढ़ आती तो वह पुल बह जाता। बरसात में नदी की उस तरफवाले लोग सड़क की तरफ नहीं आ सकते थे। गाँव कट जाते थे। बरसात बंद हो और फिर सरकारी लोग लगें, बाँस-बल्ली और छोटी-मोटी पुलिया जो लाख-पचास हजार रुपयों में बन जाय, वह सरकार बना देती थी।

मेरे गुरुजी के हृदय में दया आयी कि 'ये गाँव के लोग आटा-दाल, चीज-वस्तु लेने को कैसे जायेंगे ? दो-दो महीना उत्तरकाशी से संबंध कट जाता है ।' राजा के पास इतनी सम्पदा नहीं थी कि वह और पुल बना सके। तो साँईं लीलाशाहजी कराची से अपने रिटायर्ड इंजीनियर भक्त को ले आये और बोले : 'इधर पुल बनाना है ।' रुपये-पैसों से गुरुजी उपराम थे, फिर भी लोक-मांगल्य हेतु आखिर उन्होंने सिंध में बात की कि 'ऐसा-ऐसा... उत्तरकाशी में हम गर्मियों में जाते हैं, वहाँ साधु-संत रहते हैं। छोटी-मोटी बरसात से ही गंगा नदी के तेज बहाव के कारण तीन-चार पुलियाएँ बह जाती हैं तो लोग बेचारे दुःखी रहते हैं।' तो लोगों ने खुलकर पैसे दिये । अलग-अलग गाँवों को जोड़नेवाले तीन झूला-पुल (पैदल जानेवालों के लिए) मेरे गुरुजी ने बनवाये। अभी भी वे पुराने पुल हैं।

राजा को जब पता चला कि संत लीलाशाहजी महाराज ने गाँववालों के दुःख को देखकर पुलियाएँ बनवा दीं तो वे दर्शन करने को आये। बोले : ''बाबा ! जो काम राज्य नहीं कर पाया वह आपने किया है। आपके खाने-पीने, सीधे-सामान की व्यवस्था हमारे राज्यकोष से होगी । आपने उत्तरकाशी में हमारी प्रजा के लिए ३-३ पुल बनवाये हैं।''

बाबा ने कहा : ''हम तो संत आदमी हैं, हमें राज्य के अन्न की जरूरत नहीं है। जहाँ जाते हैं भक्त ले आते हैं। उनका थोड़ा-थोड़ा लेने से उनको पुण्य होता है, संतोष होता है।''

तब राजा ने सिर झुकाते हुए कहा : ''जैसे गुरुनानक शाह थे, ऐसे आप भी लीलाशाह हो । आपकी गढ़वाल रियासत के प्रति जो सेवा है, उसके लिए मैं नतमस्तक होकर आपका अभिवादन करता हूँ।''

जो कार्य वहाँ का राजा करने में अपने को असमर्थ महसूस करता था, वह कार्य साँईंश्री ने सहज में ही सम्पन्न कर लोगों की पीड़ा व कठिनाइयों को हर लिया। लोगों के सच्चे हितैषी, सच्चे मार्गदर्शक व उनके दुःखों और कष्टों को समझने व हरनेवाले ऐसे सच्चे संतों के प्रति सम्पूर्ण मानव-जाति सदैव ऋणी रहेगी।

भारत देश की शान हैं बापूजी

– पी. दैवमुत्थु सम्पादक, 'हिन्दू वॉइस'

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू अथक मेहनत करके देश को, देशवासियों को उन्नत कर रहे हैं । वर्षभर में पूज्य बापूजी के २०० से भी ज्यादा सत्संग-कार्यक्रम पूरे देश में हो रहे हैं । सर्दी हो या गर्मी, आँधी हो या बरसात वे अपनी सुविधा को किनारे करके अविरत देश व देशवासियों को उन्नत करने की सेवा करते हैं ।

गुजरात के डांग जिले में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोग आदिवासियों के घर-घर जाकर जनसम्पर्क अभियान कर रहे थे । वे जिस भी घर में जाते वहाँ पूज्य आशारामजी बापू का फोटो बड़े सम्मान के साथ लगा हुआ था या पूजा की जगह रखा हुआ था । संघ के एक सदस्य ने एक महिला से पूछ ही लिया कि ''तुम सब लोगों ने ये बाबाजी का फोटो अपने घर में क्यों लगा रखा है ?'' वह बड़े स्वाभिमान व गर्व के साथ बोली : ''ये हमारे भगवान हैं !''

''कैसे ?''

''मेरे पति शराब पीते, जुआ खेलते और रोज रात को मुझे मारते थे । काम-धंधे पर भी नहीं जाते थे । हमारे पास खाने को नहीं था । बच्चे भी स्कूल नहीं जा पाते थे । घर में बड़ा तनाव रहता था । बापूजी यहाँ भंडारा व सत्संग करने आये थे तब मेरे पति ने बापूजी से भगवन्नाम की दीक्षा ली । तब से इनका जुआ, शराब और सब गंदी आदतें छूट गयीं । अभी वे समय से काम पर जाते हैं । बच्चों को भी अच्छे स्कूल में दाखिल करवा दिया है । घर में तीनों वक्त खाना बनता है । हमारी जिंदगी में सुख-शांति है ! अब आप ही बतायें कि हम बापूजी को भगवान नहीं मानें तो और किसको मानें ?''

यह सुनकर मुझे समझ में आ गया कि लोग बापूजी को भगवान क्यों मानते हैं ।

लोग अगर पूछेंगे कि 'बापूजी के खिलाफ ही काफी सारे मीडियावाले क्यों दिखाते हैं ? कहीं-न-कहीं बापूजी ने कुछ तो गलत किया होगा !'

मीडियावाले ज्यादा दिखायें या कम, एक साथ दिखायें या अलग-अलग करके लेकिन जो झूठी खबर है वह सच्ची नहीं हो सकती ।

सच्चाई यह है कि प्रतिवर्ष अरबों-खरबों की सम्पत्ति को लूटकर विदेश ले जानेवाली मल्टीनेशनल कम्पनियों की इस साजिश को नेस्तानाबूद करने का साहसपूर्ण कार्य अगर किसीने किया है तो वे बापूजी हैं । ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मांतरण के काले कारनामों को जिन्होंने उजागर किया है वे बापूजी हैं । बापूजी बगैर दिखावा किये सच्चाई से मानवता की सेवा कर रहे हैं । यही कारण है कि बापूजी के विरुद्ध कभी ईसाई मिशनरियाँ तो कभी मल्टीनेशनल कम्पनियाँ मीडिया को मोहरा बनाकर षड्यंत्र करती रहती हैं । थोड़ा विस्तार में जानते हैं :

(१) बापूजी सबको 'सादा जीवन, उच्च विचार' और स्वदेशी के सिद्धांत पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं । बापूजी मंत्र-चिकित्सा, ध्यान, प्राणायाम एवं स्वदेशी आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनाने की सीख देते हैं । इससे मल्टीनेशनल कम्पनियों का प्रतिवर्ष कई हजार करोड़ का नुकसान हो रहा है ।

(२) जो एक बार भी बापूजी के सत्संग में जाते हैं, बापूजी उनके दिलों में सनातन धर्म व भारतीय संस्कृति के प्रति इतना आदर, प्रेम व महिमा भर देते हैं कि लोग अपने को 'हिन्दू' एवं 'भारतवासी' कहलाने में गर्व का

अनुभव करते हैं। लाख-दो लाख तो क्या करोड़ों रुपये देकर भी वे अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं होते । इससे उस क्षेत्र में चंद पैसे और सुविधाएँ देकर धर्मांतरण करनेवाली ईसाई मिशनरियों का तो बोरिया-बिस्तर ही बँध जाता है। आखिर वे लोग परेशान होकर बापूजी के विरुद्ध षड्यंत्र करते हैं ताकि लोगों का विश्वास बापूजी से उठ जाय। क्योंकि लोगों को अपने धर्म की महिमा का ज्ञान बापूजी से ही मिल रहा है। और जब तक लोग ऐसे संतों से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहेंगे तब तक उन्हें धर्मांतरित करना तो दूर रहा बल्कि उनसे इस विषय में बात करने में भी मिशनरियों को भय लगता है । इसीलिए परेशान होकर वे मीडिया को मोहरा बनाकर संतों को बदनाम करती हैं।

(३) अब बात रही मीडिया की... मीडिया आज एक बहुत बड़ा बिजनेस बन गया है। कई मीडियावाले घूस खाकर झूठी खबरें दिखाते हैं और कई टीआरपी बढ़ाने के लिए कुछ-का-कुछ दिखाते रहते हैं । इसके दो प्रत्यक्ष प्रमाण मैं देना चाहता हूँ । पहला, '२जी स्पेक्ट्रम' घोटाले में मीडिया ने दलाली का काम किया था यह जगजाहिर हो चुका है। इंटरनेट पर उन लोगों के बीच की बातचीत कोई आज भी सुन सकता है। हाल ही में एक टीवी चैनल के सम्पादक ने एक कम्पनी के विरुद्ध नकारात्मक खबर न दिखाने के लिए १०० करोड़ की दलाली माँगी, जिसके लिए उस सम्पादक को गिरफ्तार कर लिया गया था। ऐसे औरों के भी उदाहरण मिलेंगे। आज उन्हें बस पैसा ही नजर आता है, अपने धर्म, संस्कृति, मान-मर्यादा का कुछ पता नहीं है। पैसे के लिए अपना धर्म, शास्त्र व मर्यादाओं को बेच दिया, अपने कुल-खानदान की परम्पराओं को ठुकरा दिया और अथकरूप से समाज की भलाई में लगे हुए भगवत्स्वरूप संतों के उज्ज्वल चरित्र पर प्रहार कर दिये !

जिन संतों ने अपनी भरी जवानी देश की सेवा में बलिदान कर दी, जिन्होंने लाखों लोगों को सच्चरित्रता की राह पर लगाया, अपने व्यक्तिगत परिवार के मोह को त्यागकर बेसहारा, गरीब तथा आदिवासी लोगों के दुःखों को अपने सिर-माथे पर रखा, उनकी समस्या को अपनी समस्या समझकर उन्हें सहानुभूति, प्रेम, सांत्वना देते हुए तन-मन-धन से उनकी सेवा की, ऐसे संतों को बदनाम करके पैसा कमानेवाले जरा सोचें तो सही कि क्या उस पैसे से उनके परिवार में शांति, आनंद, स्वास्थ्य, निश्चिंतता है ?

चंद मीडियावाले ही मिलेंगे जो आज भी सत्य के मार्ग पर अडिग हैं और पैसों के लिए लोगों की श्रद्धा के साथ खिलवाड़ नहीं करते। धन्य हैं उनके माता-पिता ! धन्य है वह सौभाग्यशाली मीडियावाला !

तीन सुधारे देश को, संत सती और शूर।
तीन बिगाड़े देश को, कपटी कायर क्रूर ॥

(४) जब हम लोग दिवाली पर अपने परिवारजनों के बीच हर्षोल्लास के साथ आनंद ले रहे होते हैं, तब बापूजी संसार की सुख-सुविधा और शोर-शराबे से दूर समाज से उपेक्षित आदिवासियों को कम्बल, दवाएँ, वस्त्र, अन्न, टिफिन, तेल, मिठाइयाँ आदि बाँट रहे होते हैं। यह सब मीडिया ने कभी दिखाया है क्या ? नहीं ! क्योंकि यह सब दिखाने से उनके चैनलों की टीआरपी नहीं बढ़ेगी ऐसा उलटा पाठ उन्हें पढ़ाया गया है। क्या हो गया है इनको ! इतनी उलटी सीख ! इतना स्वार्थ ! इतनी गिरी हुई मानसिकता !

(५) अगर कोई संत सच्चाई से लोगों को जागृत करने लग जायें तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि देशविरोधी तत्त्वों को तकलीफ न हो ? बापूजी के सत्संग में जाकर लोगों की शराब छूट गयी, महँगी-महँगी दवाओं और बिनजरूरी ऑपरेशनों से लोग बच रहे हैं, जनता सादगी और स्वदेशी के सिद्धांत पर चल रही है, जिससे कई लूटनेवालों की आजकल पहले जैसी सेल नहीं होती है। तो अब इसमें बापूजी का क्या कसूर है ?

लोगों से मेरा अनुरोध है कि वे बिकाऊ मीडिया पर नहीं, अपने अनुभव का आदर करें कि बापूजी के सत्संग में जाने से हमारे जीवन में अच्छा स्वास्थ्य, अच्छी

समझ व सुख-शांति आयी तथा और भी कई शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ हुए हैं। बापूजी व्यक्ति-विशेष का नहीं अपितु अच्छाई का पक्ष लेते हैं। उनमें ऐसा कला-कौशल है, वे अच्छाई ऐसे ढंग से भरते हैं कि बुराई अपने-आप भाग जाती है।

बाबा रामदेवजी के ऊपर जब दंत-मंजन में हड्डी का चूर्ण मिलाने का आरोप लगा था, तब बापूजी ने इसे षड्‌यंत्र बताकर बाबा रामदेवजी का समर्थन किया था । परमादरणीय शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी को पुलिस ने गिरफ्तार किया, तब भी पूज्य बापूजी ने उसे भारतीय संस्कृति के विरुद्ध षड्‌यंत्र बताते हुए उस दुष्कृत्य की आलोचना ही नहीं की बल्कि दिल्ली की सड़कों पर जाकर धरना भी दिया । ऐसे संतों का आदर नहीं करें तो और किसका करें ?

बापूजी के दिव्य कर्मों से ही उनके दिव्य विचारों व दिव्य जीवन की झलक मिल जाती है। देश में जब भी किसीके साथ अन्याय हुआ है तब-तब बापूजी ने उसका विरोध किया है । इसीलिए बापूजी को मेरा नमन ! वंदन ! भगवान आपकी आयु लम्बी करें ताकि आप लम्बे समय तक विश्वमानव की सेवा कर सबको नेकी की राह पर लगाते रहें, सबको जीवन जीने की राह दिखाते रहें।

अक्षय फल देनेवाली अक्षय नवमी

(११ नवम्बर)

कार्तिक शुक्ल नवमी को 'अक्षय नवमी' तथा 'आँवला नवमी' कहते हैं । अक्षय नवमी को जप, दान, तर्पण, स्नानादि का अक्षय फल होता है । इस दिन आँवले के वृक्ष के पूजन का विशेष माहात्म्य है । पूजन में कपूर या घी के दीपक से आँवले के वृक्ष की आरती करनी चाहिए तथा निम्न मंत्र बोलते हुए इस वृक्ष की प्रदक्षिणा करने का भी विधान है :

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

इसके बाद आँवले के वृक्ष के नीचे पवित्र ब्राह्मणों व सच्चे साधक-भक्तों को भोजन कराके फिर स्वयं भी करना चाहिए। घर में आँवले का वृक्ष न हो तो गमले में आँवले का पौधा लगा के अथवा किसी पवित्र, धार्मिक स्थान, आश्रम आदि में भी वृक्ष के नीचे पूजन कर सकते हैं। कई संत श्री आशारामजी आश्रमों में आँवले के वृक्ष लगेहुए हैं। इन पुण्यस्थलों में जाकर भी आप भजन-पूजन का मंगलकारी लाभ ले सकते हैं।

गौ-पूजन से सौभाग्यवृद्धि

(गोपाष्टमी पर्व : १० नवम्बर)

कार्तिक शुक्ल अष्टमी को 'गोपाष्टमी' कहते हैं। यह गौ-पूजन का विशेष पर्व है। इस दिन प्रातःकाल गायों को स्नान कराके गंध-पुष्पादि से उनका पूजन किया जाता है। इस दिन गायों को गोग्रास देकर उनकी परिक्रमा करें और थोड़ी दूर तक उनके साथ जायें तो सब प्रकार की अभीष्ट सिद्धि होती है । सायंकाल जब गायें चरकर वापस आयें, उस समय भी उनका आतिथ्य, अभिवादन और पंचोपचार-पूजन करके उन्हें हरी घास, भोजन आदि खिलायें और उनकी चरणरज ललाट पर लगायें। इससे सौभाग्य की वृद्धि होती है।

(गोपाष्टमी की अधिक जानकारी के लिए 'ऋषि प्रसाद' का नवम्बर २०१२ का अंक पढ़ें।)

संस्कृति-रक्षार्थ सब एकजुट हों

काशी सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी महाराज : षड्यंत्रों के तहत हिन्दू समाज पर अन्याय, अत्याचार बंद किया जाना चाहिए । संतों के सम्मान, स्वाभिमान की रक्षा होनी चाहिए ।

अगर संतों को जेल में डालकर बदनाम करने का षड्यंत्र होता रहा तो भारत की अस्मिता, भारत की संस्कृति सुरक्षित नहीं रह पायेगी । इसे सुरक्षित रखने के लिए सबको एकजुट हो के प्रयास करना होगा । और वह दिन दूर नहीं कि आशारामजी बापू आप सब लोगों के बीच में आयेंगे, आरोपों से बरी होंगे और राष्ट्रहित, समाजहित होगा ।

स्वामी चक्रपाणिजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा : जिस प्रकार हवाई जहाज में और एमआरआई स्कैन के दौरान कैमरा बापूजी के सामने लगाया गया था, कई टीवी चैनलों के माध्यम से मैंने पूछा सरकार से कि 'किस नियम के अंतर्गत कैमरा ले जाया गया और बापू के चेहरे पर लगाया गया ?' बोलते : 'देखो, बापू कैसे उदास हो गये ?' अरे, उदास नहीं हुए, उस समय भी बापूजी एक संदेश देते गये - समता का, शांति का, धैर्य का । उसी समय मैंने कहा कि 'ये संत नहीं, ये तो संतशिरोमणि हैं ।'

निर्दोष पूज्य बापूजी को जैसे परेशान किया जा रहा है, जेल में डाल दिया गया..., मैंने तो कहा कि २१वीं सदी का यह सबसे बड़ा अन्याय है ।

समन्स में ३० तारीख तक का समय दिया गया । २९ को रिश्तेदार का देहांत हो जाता है, वे समय माँगते हैं पर नहीं मिलता है ।

जब भी किसी महात्मा पर, किसी शूर तत्त्व पर अत्याचार होता है, याद रखना प्रकृति उसे सजा देती है । निश्चित रूप से आप ये समझ जाओ कि हम सबकी जीत होगी । ये संत-महासभा, संत-समाज तय करता है कि बापूजी संत नहीं, संतशिरोमणि हैं ।

इतनी मीडिया ट्रायल की गयी । मैंने कहा कि 'आप तो बे-लगाम घोड़े हो गये हो भाई ! किसी निर्दोष के पीछे नहीं पड़ना चाहिए । हाँ, आप अगर दिखाओ तो सबका पक्ष दिखाना चाहिए ।' मैं टीवी पर बोलता हूँ तो मेरी काफी बाइट ही काट दी जाती है ।

हम जोधपुर के मणई गाँव गये थे, उस कमरे में भी गये थे जहाँ की झूठी बात बतायी गयी । कोई जा के देखे तो पता चल जायेगा कि 'ऐसा वहाँ सम्भव ही नहीं है ।' निश्चित रूप से यह साजिश है और ये साजिश मात्र संत आशारामजी बापू के खिलाफ नहीं है, भारतीय संस्कृति के खिलाफ है ।

श्री चारुदत्त पिंगले, राष्ट्रीय मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति : पूज्य बापूजी पर लगाया गया आरोप हिन्दू धर्म पर आघात है ।

महामंडलेश्वर श्री रामगिरिजी महाराज, जूना अखाड़ा : संतों की वाणी से संस्कृति मजबूत होती है । संस्कृति पर प्रहार करने के लिए ही संतों पर आरोप किये जा रहे हैं ।

श्री उद्धवजी महाराज, प्रचारक, वारकरी सम्प्रदाय (महाराष्ट्र) : संत आशारामजी बापू हमारे प्राण हैं, हमारी संस्कृति के प्राण हैं। इस जमाने में दुनिया में अगर साधु-संतों का अपमान होता है और जो चोर, लफंगे, गुंडे हैं, उनको सम्मान मिलता है, आतंकवादियों को बिर्यानी मिलती है तो इससे बड़ी क्या आफत हमारी संस्कृति पर होगी!

श्री भास्करगिरिजी महाराज, वारकरी सम्प्रदाय : साधु-संतों को बदनाम करने का षड्यंत्र देशविघातक शक्तियों द्वारा किया जा रहा है।

स्वामी रामेश्वर शास्त्रीजी महाराज, महामंत्री, संत समिति (महाराष्ट्र) एवं अध्यक्ष, वारकरी सम्प्रदाय : हम पूरे संत बापूजी के साथ में थे, हैं और रहेंगे।

श्री फूलकुमारजी शास्त्री, शिव-कथावाचक : संत आशारामजी बापू का हमारे हृदय में जो सम्मान है, वह षड्यंत्रकारी एवं दुष्प्रचारक कभी नहीं निकाल सकते। ऐसे संतों का बार-बार इस धरा पर आना नहीं होता और जब भी होता है तो सारे संस्कृतिप्रेमियों को इकट्ठा करने के लिए और भगवान के प्रति आस्था प्रबल बनाने के लिए होता है।

डॉ. इन्द्रा तिवारी, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय संत महासभा : संस्कृति के कर्णधार संत के ऊपर इस तरह का आरोप! एफआईआर ५ दिन बाद की है, अतः सुनियोजित, सोची-समझी साजिश है। मीडिया ने एक तरफ 'रेप-रेप...' करके चलाया चैनलों में लेकिन जो आरोप आपने लगाया वह आरोप तो एफआईआर में ही नहीं है। तो इसका खंडन तो यहीं हो जाता है। बाकी जो कार्य है वह न्यायपालिका का है। मीडियावाले खुद ही न्यायाधीश बनकर इसमें दाँत गड़ाने की चेष्टा क्यों कर रहे हैं?

भुट्टो खानजी : जिनको ऐसे कामिल मुर्शिद मिल जाते हैं उनकी तो सहज में ही उस रूहानियत से एकाकारता हो जाती है। दीक्षा के बाद मेरे सारे ऐब कहाँ चले गये, पता भी नहीं चला! उसके बाद स्वास्थ्य भी निखरता गया।

आश्रम जाते-जाते मुझे लगभग १० साल हो चुके हैं। पूज्य बापूजी की कृपा से हम पति-पत्नी के जीवन में वासनाएँ मिटी हैं और व्रत, संयम आया है। यह ६ करोड़ भक्तों व देश की जनता की इच्छा है कि बापूजी जल्दी-से-जल्दी हम सबके समक्ष आयें।

डॉ. विष्णु हरि, नेपाल संसद में विदेशी नीति मसौदा समिति के सदस्य, जापान में नेपाल के भूतपूर्व राजदूत, कंट्री डायरेक्टर : संत आशारामजी बापू सिर्फ भारत की नहीं, सम्पूर्ण विश्व की धरोहर हैं। उनकी रक्षा करिये, प्राचीन सभ्यता की रक्षा करिये। लड़की की मेडिकल रिपोर्ट से कुछ प्रकट नहीं हुआ अतः यह साफ है कि यह आशारामजी बापू के विरुद्ध बहुत बड़ा षड्यंत्र है।

वसुंधरा शर्मा, अध्यक्षा, सार्थक महिला संगठन : हमारे पूज्य बापूजी पर जिन्होंने मनगढ़ंत आरोप लगाये हैं वे आज नहीं तो कल मुँह की खायेंगे-ही-खायेंगे । बापूजी निष्कलंकित साबित होंगे ।

कॉल सेंटर में महिलाओं को परेशान किया जाता था तो बापूजी ने व्यासपीठ से उद्घोष किया था । तब नियम बना और महिला उत्पीड़न के केस फाइल होने शुरू हो गये और आज महिलाएँ कॉल सेंटरों में पहले से बहुत ज्यादा सुरक्षित हो गयीं ।

दूसरा आह्वान बापूजी ने किया था कि 'गर्भपात नहीं कराया जाय ।' जो माँ-बाप सोचते थे कि 'घर में अगर लड़की आ रही है तो गर्भपात करा दिया जाय ।' उसको बापूजी ने रोका । आज मैं उन साजिशकर्ताओं एवं दुष्प्रचारकों से पूछती हूँ कि जिस संत ने नारियों के संबंध में इतने अच्छे निर्णय किये, इतनी अच्छी राह दिखायी उनके ऊपर ये घिनौना इल्जाम लगवाते हुए, अनर्गल दुष्प्रचार करते हुए आपको जरा भी शर्म नहीं आती ? आपने कभी भी उनके पुण्यकर्मों को नहीं देखा ?

बापूजी के इतने सारे सेवाकार्य चल रहे हैं, हमें ब्रह्मचर्य, संयम, तपस्या का सबसे बड़ा गुण सिखाया गया है । 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' की करोड़ों पुस्तकें बाँटी गयीं और कितने बच्चों व बड़ों का जीवन बदला ! पूज्य बापूजी ने जो योजनाएँ लागू की हैं, उनके लिए इन संत को 'भारतरत्न' या कोई ऐसी विभूति से शोभित करना चाहिए कि आपके द्वारा इतने-इतने परिवारों का भला हुआ, इतने-इतने परिवारों ने नशा करना छोड़ दिया... । आपको तो एक विशिष्ट सम्माननीय व्यक्ति करके 'भारतरत्न' क्या 'विश्वरत्न' का सम्मान देना चाहिए और आपने उनको कहाँ डाल दिया ? ये बुद्धि का कितना दिवालियापन है !

हमारी जो लड़ाई है, औरतों के स्वाभिमान की लड़ाई है । अब औरतों के स्वाभिमान की लड़ाई चलेगी और बापूजी पर लगाये गये एक-एक इल्जाम को हम हटायेंगे, इसके लिए सारी नारियाँ कटिबद्ध हैं ।

परम पूज्य आशारामजी बापू हिन्दुओं की आस्था के केन्द्र हैं

धर्मरक्षार्थ रत डॉ. श्री जयंत आठवलेजी, संस्थापक, सनातन संस्था : परम पूज्य आशारामजी बापू की जीवनगाथा ज्ञात होने के उपरांत कोई भी व्यक्ति जिसे भगवान में आस्था है, वह उनके चरणों में नतमस्तक होगा।

बापूजी के संदर्भ में मनचाहा भाष्य करनेवालो ! क्या आपमें उनके समान सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय कार्य करने का साहस है ? पूज्य आशारामजी बापू एवं उनका सम्पूर्ण साधक परिवार (उनके आश्रम व साधक-भक्त) सामाजिक सेवाकार्य करने में अग्रणी है।

धर्मद्रोही कार्यक्रम एकाएक समाप्त !

सनातन प्रभात । 'आज तक' चैनल ने ५ सितम्बर को शाम ६ बजे बापूजी पर घिनौने आरोप लगाकर उन पर एक चर्चासत्र आयोजित किया था । इन आरोपों का सनातन संस्था के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अभय वर्तकजी ने खंडन किया तथा मीडिया के पक्षपातपूर्ण व देशद्रोही रवैये पर विविध उदाहरण प्रस्तुत करते हुए जयपुर के 'ग्रेस चर्च होम' में १३ मणिपुरी लड़कियों पर बलात्कार के संदर्भ में ४ सितम्बर के दैनिक 'सनातन प्रभात' में प्रकाशित समाचार का संदर्भ दिया । इसके देते ही सूत्र-संचालक की मानो पैरों तले भूमि खिसक गयी और एंकर ने वह चर्चासत्र निर्धारित समय से १० मिनट पहले ही एकाएक अधूरा छोड़कर कार्यक्रम समाप्त कर दिया ।

साजिश को सच का रूप देने की मनोवैज्ञानिक रणनीति

– शिल्पा अग्रवाल, प्रसिद्ध मनोविज्ञानी

संत श्री आशारामजी बापू के खिलाफ जो षड्यंत्र चल रहा है, उसका मनोवैज्ञानिक तरीके से किस तरह से सुनियोजन किया गया है, यह मैं एक मनोविज्ञानी होने के नाते आपको बताना चाहती हूँ। आठ मुख्य पहलू समझेंगे कि किस तरह इस साजिश को सच का मुखौटा पहनाया जा रहा है।

(१) जनता के विशिष्ट वर्गों पर निशाना : समाज के शिक्षित, जागरूक, उच्च एवं मुख्यतः युवा वर्ग को निशाना बनाया गया क्योंकि इनको विश्वास दिलाने पर ये तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं।

(२) षड्यंत्र का मुद्दा : देश की ज्वलंत समस्या 'महिलाओं पर अत्याचार' को मुख्य मुद्दा बनाया है । इस भावनात्मक विषय पर हर कोई तुरंत प्रतिक्रिया दे के विरोध दर्शाता है।

(३) रणनीति : चीज को यथार्थपूर्ण, विश्वसनीय, प्रभावशाली दिखाने जैसी मार्केटिंग रणनीति का उपयोग करके दर्शकों को पूरी तरह से प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है।

दर्शक मनोविज्ञान का भी दुरुपयोग किया जा रहा है। कोई विज्ञापन हमें पहली बार पसंद नहीं आता है लेकिन जब हम बार-बार उसे देखते हैं तो हमें पता भी नहीं चलता है कि कब हम उस विज्ञापन को गुनगुनाने लग गये। बिल्कुल ऐसे ही बापूजी के खिलाफ इस बोगस मामले को बार-बार दिखाने से दर्शकों को असत्य भी सत्य जैसा लगने लगता है।

(४) प्रस्तुतिकरण का तरीका : पेड मीडिया चैनलों के एंकर आपके ऊपर हावी होकर बात करना चाहते हैं। वे सिर्फ खबर को बताना नहीं चाहते बल्कि सेकंडभर की फालतू बात को भी 'ब्रेकिंग न्यूज' बताकर दिनभर दोहराते हैं और आपको हिप्नोटाइज करने की कोशिश करते हैं।

(५) भाषा : खबर को बहुत चटपटे शब्दों के द्वारा असामान्य तरीके से बताते हैं। 'बात गम्भीर है, झड़प, मामूली' आदि शब्दों की जगह 'संगीन, वारदात, गिरोह, बड़ा खुलासा, स्टिंग ऑपरेशन' ऐसे शब्दों के सहारे मामूली मुद्दे को भी भयानक रूप दे देते हैं।

(६) आधारहीन कहानियाँ बनाना, स्टिंग ऑपरेशन्स और संबंधित बिन्दु : 'आश्रम में अफीम की खेती, स्टिंग ऑपरेशन' आदि आधारहीन कहानियाँ बनाकर मामले को रुचिकर बना के उलझाने की कोशिश करते हैं।

(७) मुख्य हथियार : बहुत सारे विडियो जो दिखाये जाते हैं वे तोड़-मरोड़ के बनाये जाते हैं। ऐसे ऑडियो टेप भी प्रसारित किये जाते हैं। यह टेक्नोलॉजी का दुरुपयोग है।

इसके अलावा कमजोर, नकारात्मक मानसिकतावालों को डरा के या प्रलोभन देकर उनसे बुलवाते हैं। आश्रम से निकाले गये २-५ बगावतखोर लोगों को मोहरा बनाते हैं ताकि झूठी विश्वसनीयता बढ़ायी जा सके।

(८) मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार करना : बापूजी की जमानत की सुनवाई से एक दिन पहले धमकियों की खबरें उछाली जाती हैं, कभी पुलिस को, कभी माता-पिता और लड़की को तो कभी न्यायाधीश को। ये खबरें कभी भी कुछ सत्य साबित नहीं हुईं।

अब आप खुद से प्रश्न पूछिये और खुद ही जवाब ढूँढ़िये कि क्या यह आरोप सच है या एक सोची-समझी साजिश ?

और एक बात कि **केवल पेड मीडिया चैनल ही नहीं बल्कि इसीके समान प्रिंट मीडिया भी खतरनाक तरीके से जनमानस को प्रभावित कर रहा है। इन दोनों से सावधान रहना चाहिए।**

पत्रकारिता का चरित्र बना अविश्वसनीय

समाज की श्रद्धा को संत ईश्वर से जोड़ते हैं। वे अपनी सुख-सुविधा की परवाह नहीं करते। वे कष्ट सहकर भी निरपेक्ष भाव से समाज तथा संस्कृति के उत्थान में स्वयं को लगा देते हैं। बहती-उफनती इस विचित्र संसार नदी पर वे स्वयं सेतु बन जाते हैं ताकि लोग पार हो जायें। परंतु संस्कृति-विरोधियों एवं विकृत मानसिकतावाले देश के गद्दारों को देश व समाज की उन्नति सहन नहीं होती। और जब उन्हें अपना उल्लू सीधा होते नहीं दिखता तो ऐसे लोग ही संत-महापुरुषों को बदनाम करने के षड्यंत्र रच लेते हैं। इसमें साथ निभाता है मीडिया का वह तबका जो बिकाऊ व देशद्रोही है।

यह घटना ऐसे मीडिया की करतूतों को बेनकाब करती है :

स्वामी विवेकानंदजी द्वारा विदेशों में वैदिक सद्ज्ञान का डंका बजाये जाने से ईसाई मिशनरीवाले बौखला गये। उन्होंने अमेरिका, यूरोप आदि के अनेक समाचार पत्रों में विवेकानंदजी पर तरह-तरह के घृणित चारित्रिक आरोप लगाये और खूब कीचड़ उछाला पर विवेकानंदजी उससे जरा भी विचलित नहीं हुए। कुछ विदेशी कुप्रचारक समाचार पत्रों ने स्वामीजी की छवि बिगाड़ने के उद्देश्य से उनका इंटरव्यू भी लिया, जिससे उनकी दूषित मनोवृत्ति का परिचय मिलता है। 'बोस्टन डेली एडवरटाइजर' से एक पत्रकार 'ब्लू बारबर' उनका इंटरव्यू लेने आया। प्रस्तुत हैं कुछ अंश : **(प्रश्नकर्ता आरोप लगाते हुए)**

प्रश्न : आपके दुराचरण से परेशान होकर मिशीगन के पूर्व गवर्नर की पत्नी श्रीमती वागले ने अपनी नाबालिग नौकरानी को निकाल दिया। यह सब अखबारों में छपा है। आपको क्या कहना है ?

उत्तर : इसके लिए कृपया आप श्रीमती वागले से पूछें और उनकी बात पर विश्वास करें।... और सोचने-समझने की यदि शक्ति हो, नीर-क्षीर विवेकी बनने की इच्छा हो तो उस नौकरानी से जाकर पूछें। थोड़ा परिश्रम तो करना पड़ेगा।

प्रश्न : इस विषय में आपको कुछ नहीं कहना ?

उत्तर : नहीं।

प्रश्न : श्री हेल ने अपनी पुत्रियों को आपसे मिलने से रोका है ? ...क्यों ?

उत्तर : उनकी दोनों अविवाहित पुत्रियाँ यहाँ मेरे साथ बैठी हुई हैं।... उनसे पूछकर देखिये - परंतु मेरे सम्मुख नहीं, अलग से।

विवेकानंदजी ने कुछ रुककर कहा : ''आप भाग्यशाली हैं। श्री वागले और उनकी नौकरानी, जिसे आपके अखबार ने विवश होकर 'निकालना पड़ा' ऐसा लिखा है, वे आ रही हैं।''

ब्लू बारबर सकपका गया। उसे ठंड में पसीने आ गये पर झेंप के कारण पसीना पोंछ नहीं सका।

विवेकानंदजी ने कहा : ''ब्लू बारबर ! कृपया आप अपना पसीना पोंछ लें। मुझे खेद है कि यहाँ पत्रकारिता का

चरित्र अविश्वसनीय है। यह यहाँ के विकास के लिए अशुभ लक्षण है। मुझे और कुछ नहीं कहना है और जो कहा है, वह छपेगा भी नहीं।''

वे उठकर चल दिये। पत्रकार पसीना पोंछता रह गया। स्वामी विवेकानंदजी को आज सारी दुनिया जानती है परंतु लोगों को गुमराह करने का भयंकर अपराध करके अपने कुल-खानदान को भी कलंकित करनेवाले निंदक नष्ट-भ्रष्ट हो गये।

वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर कहते हैं : ''पहले केवल प्रिंट मीडिया थी जो निर्दोष संतों को भी दोषी साबित करने में लगी रहती थी, परंतु वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने तो सारी हदें पार कर दी हैं। मिशनरियों के गुलाम बिकाऊ मीडिया को पूरे देश में क्या हो रहा है - इससे कोई मतलब नहीं है। आकाश छूती पेट्रोल आदि की कीमतें, रुपये का अवमूल्यन, आत्महत्या करते किसान आदि जनसाधारण के हितों से जुड़ी खबरों को प्रमुखता देना इनकी फित्रत में नहीं है, इन्हें तो बस कहीं से कोई भारतीय संस्कृति-विरोधी खबर मिल जाय, फिर चाहे वह झूठी अफवाह ही क्यों न हो, उसे ये अच्छे-से मसाला लगा के चटपटी खबर बनाकर करोड़ों देशवासियों को भ्रमित करने में देर नहीं करते।

सच्चाई तो यह है कि कुछ मीडिया के पक्षपाती, राष्ट्र-विघातक रवैये से भारत लोकतांत्रिक देश है या नहीं - यह सवाल हर नागरिक के मन में उठ रहा है। और क्यों न उठेगा, हम देख रहे हैं कि संत आशारामजी के समर्थन में पिछले ४०-४५ दिनों से सत्याग्रह करते करोड़ों देशवासियों की आवाज इनके कानों तक नहीं पहुँची लेकिन किराये के चार लोग अगर किसी संत के विरोध में दो नारे लगा दें तो दिनभर 'ब्रेकिंग न्यूज' चलाते रहेंगे। समाज, देश तथा विश्व का मंगल करनेवाले संतों को बदनाम कर उनके राष्ट्रहितकारी सेवाकार्यों में बाधा पैदा करना - यही इनका उद्देश्य हो गया है। अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए ये दिनभर अनर्गल कहानियाँ बना-बनाकर जनमानस विकृत करने का प्रयास करते हैं।

मेरा मानना है कि ऐसे बिकाऊ मीडिया के षड्यंत्र से देश की रक्षा के लिए 'एटूजेड' व 'सुदर्शन' जैसे सच्चे, स्वदेशी, संस्कृतिप्रेमी चैनलों की जरूरत है, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनियता बनी रहे।''

क्यों नजरंदाज किया गया महत्त्वपूर्ण गवाहों को ?

आरोप लगानेवाली लड़की ने जिस जगह की वह मनगढ़ंत घटना बतायी है, जोधपुर के मणई गाँव में स्थित उस कुटिया की देखभाल करनेवाले विष्णु ने एक इंटरव्यू में ऐसे कई तथ्य बताये जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि यह एक सुनियोजित षड्यंत्र है।

विष्णु : ''आरोप लगानेवाली लड़की व उसका परिवार १६ अगस्त की सुबह को मणई से जोधपुर रेलवे स्टेशन जाने के लिए निकले थे। मणई और रेलवे स्टेशन के बीच में तकरीबन ४ से ५ पुलिस स्टेशन पड़ते हैं तो वे लोग वहाँ पर भी एफआईआर दर्ज करा सकते थे। दिल्ली जाकर एफआईआर दर्ज कराने से एक नया सवाल खड़ा होता है।

१६ अगस्त की सुबह को लड़की व उसके पिताजी हमारे घर आये, खाना खाया और लड़की अपने पिताजी के साथ एकदम हँस-मिल के बातचीत कर रही थी तथा खुशी से मेरे बेटे-बेटी को १००-१०० रुपये भी दिये, फिर मेरा चचेरा भाई उनको रेलवे स्टेशन तक छोड़कर आया।''

गवाह विष्णु की इन तथ्यपूर्ण बातों से लड़की के मनगढ़ंत आरोपों की पोल खुल जाती है। परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि अधिकांश मीडिया ने इतने महत्त्वपूर्ण गवाह का इंटरव्यू समाज तक नहीं पहुँचाया। आखिर क्यों ?

अमृत बरसाती शरद पूर्णिमा

शरद पूर्णिमा की रात को चन्द्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। ये किरणें स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायी हैं। इस रात्रि में शरीर पर हल्के-फुल्के परिधान पहनकर चन्द्रमा की चाँदनी में टहलने, घास के मैदान पर लेटने तथा नौका-विहार करने से त्वचा के रोमकूपों में चन्द्र-किरणें समा जाती हैं और बंद रोम-छिद्र प्राकृतिक ढंग से खुलते हैं। शरीर के कई रोग तो इन चन्द्र-किरणों के प्रभाव से ही धीरे-धीरे दूर होने लगते हैं।

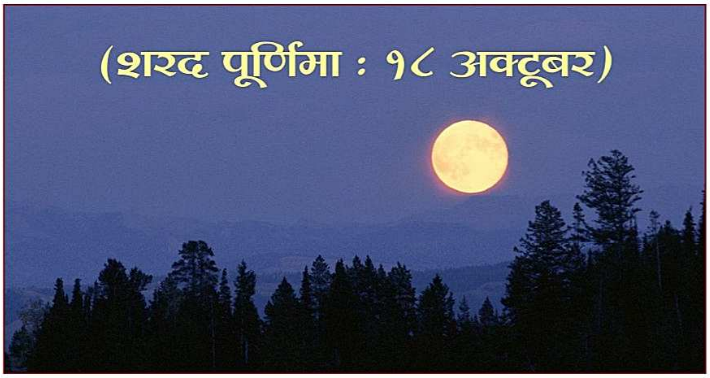

इन चन्द्र-किरणों से त्वचा का रंग साफ होता है, नेत्रज्योति बढ़ती है एवं चेहरे पर गुलाबी आभा उभरने लगती है। यदि देर तक पैरों को चन्द्र-किरणों का स्नान कराया जाय तो ठंड के दिनों में तलुए, एड़ियाँ, होंठ फटने से बचे रहते हैं।

चन्द्रमा की किरणें मस्तिष्क के लिए अति लाभकारी हैं। मस्तिष्क की बंद तहें खुलती हैं, जिससे स्मरणशक्ति में वृद्धि होती है। साथ ही सिर के बाल असमय सफेद नहीं होते हैं।

शरद पूर्णिमा की चाँदनी के स्वास्थ्य-प्रयोग

✻ **दो पके सेवफल के टुकड़े करके शरद पूर्णिमा को रातभर चाँदनी में रखने से उनमें चन्द्रकिरणें और ओज के कण समा जाते हैं। सुबह खाली पेट सेवन करने से कुछ दिनों में स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक लाभकारी परिवर्तन होते हैं।**

✻ **इस दिन रात को चाँदनी में सेवफल २-३ घंटे रख के फिर उसे चबा-चबाकर खाने से मसूड़ों से खून निकलने का रोग (स्कर्वी) नहीं होता तथा कब्ज से भी छुटकारा मिलता है।**

✻ २५० ग्राम दूध में १-२ बादाम व २-३ छुहारों के टुकड़े करके उबालें। फिर इस दूध को पतले सूती कपड़े से ढँककर चन्द्रमा की चाँदनी में २-३ घंटे तक रख दें। यह दूध औषधीय गुणों से पुष्ट हो जायेगा। सुबह इस दूध को पी लें।

✻ सोंठ, काली मिर्च और लौंग डालकर उबाला हुआ दूध चाँदनी रात में २-३ घंटे रखकर पीने से बार-बार जुकाम नहीं होता, सिरदर्द में लाभ होता है।

✻ इस रात्रि में ३-४ घंटे तक बदन पर चन्द्रमा की किरणों को अच्छी तरह पड़ने दें। इससे त्वचा मुलायम, कोमल व कंचन-सी दमकने लगेगी।

✻ **तुलसी के १०-१२ पत्ते एक कटोरी पानी में भिगोकर चाँदनी रात में २-३ घंटे के लिए रख दें। फिर इन पत्तों को चबाकर खा लें व थोड़ा पानी पियें। बचे हुए पानी को छानकर एक-एक बूँद आँखों में डालें, नाभि में मलें तथा पैरों के तलुओं पर भी मलें। आँखों से धुँधला दिखना, बार-बार पानी आना आदि में इससे लाभ होता है। तुलसी के पानी की बूँदें चन्द्रकिरणों के संग मिलकर प्राकृतिक अमृत बन जाती हैं। (दूध व तुलसी के सेवन में दो-ढाई घंटे का अंतर रखें।)**

देश-विदेश में गूँजी पुकार, बंद हो बापूजी पर अत्याचार

विश्ववंदनीय पूज्य बापूजी को सुनियोजित षड्यंत्र के अंतर्गत फँसाकर जेल में डालने के खिलाफ देश-विदेश में करोड़ों श्रद्धालुओं तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों, युवा सेवा संघों एवं महिला उत्थान मंडलों के साथ विभिन्न धार्मिक, सामाजिक व महिला संगठनों ने रैलियों, धरना-प्रदर्शनों आदि के द्वारा इस षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार का शांतिपूर्ण जाहिर विरोध किया।

भारत देश ही नहीं बल्कि विदेशों के लंदन, बोस्टन, न्यूयॉर्क आदि कई शहरों में भी षड्यंत्र के खिलाफ आवाज उठायी जा रही है। दिल्ली में २३ अगस्त को निकली विशाल रैली में लाखों लोग शामिल हुए और हजारों लोग जंतर-मंतर पर धरने में जा बैठे। निर्दोष पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए लाखों महिलाओं एवं भाइयों ने जप-पाठ, हवन व प्रार्थना के साथ कई दिनों तक व्रत, उपवास भी रखा। ४, ५ व ११ सितम्बर को भी दिल्ली में विशाल शांति रैलियाँ निकालकर श्रद्धालुओं ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं कि **एक लड़की की मनगढ़ंत बातें सच्ची या हम करोड़ों साधकों के पवित्र अनुभव सच्चे ?**

दिल्ली में ११ व १२ सितम्बर को आयोजित **'जन-सत्याग्रह व विशाल संत-सम्मेलन'** में देशभर से आये संतों एवं लाखों लोगों ने पूज्य बापूजी के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए इस षड्यंत्र की भारी निंदा की। जंतर-मंतर पर सतत विरोध-प्रदर्शन अभी भी जारी है। पंजाब में वहाँ के प्रसिद्ध संतों ने बापूजी पर लगे आरोपों तथा षड्यंत्र के विरोध में संत-सम्मेलन कर अपनी आवाज बुलंद की।

१९ सितम्बर को मुंबई में भी श्री नारायण साँईंजी एवं विभिन्न संतों की उपस्थिति में बापूजी के समर्थन में **महासम्मेलन** हुआ। महाराष्ट्र में मुंबई के सायन व बांद्रा, औरंगाबाद, लातूर, अकोला, जलगाँव, खामगाँव जि. बुलढ़ाणा, नागपुर, नांदेड़, नासिक, भुसावल जि. जलगाँव, पुणे, बीड, चांदवड जि. नासिक, प्रकाशा, धुलिया, अमरावती, अहमदनगर, श्रीरामपुर जि. अहमदनगर, कल्याण, उल्हासनगर आदि स्थानों में शांति रैलियाँ निकालकर लाखों साधकों ने अपने दिल की गहरी व्यथा व्यक्त करते हुए सरकार से निर्दोष संत पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग की। उस्मानाबाद में विभिन्न धार्मिक संगठनों ने विरोध-प्रदर्शन किया।

राजस्थान में बीकानेर, अलवर, श्रीगंगानगर, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, बाड़मेर, निवाई जि. टोंक,

पीपाड़ सिटी, पाली, भीलवाड़ा आदि तथा उत्तर प्रदेश में बलिया, मेरठ, हाथरस, जौनपुर, अलीगढ़, बरेली, बदायूँ, उझानी जि. बदायूँ, इगलास जि. अलीगढ़, गोरखपुर, झाँसी, लखनऊ, वाराणसी, आगरा, मुजफ्फरपुर (बिहार) आदि स्थानों पर शांति रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन करके लोगों ने मीडिया के भ्रामक कुप्रचार का खंडन करते हुए बापूजी के खिलाफ चल रही साजिश का अंत करने की माँग की।

मध्य प्रदेश में ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर, रतलाम, उज्जैन, महू, छतरपुर, मुलताई जि. बैतूल, सबलगढ़ जि. मुरैना, शिवपुरी, पेटलावद जि. झाबुआ, टीकमगढ़ तथा छत्तीसगढ़ में राजनांदगाँव, कोरबा, रायगढ़, बेमेतरा, धमतरी, बिलासपुर, डोंगरगढ़ जि. राजनांदगाँव, दुर्ग आदि स्थानों पर रैली तथा विरोध-प्रदर्शन हुए। रायपुर में हजारों लोगों ने ८ सितम्बर से अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया हुआ है।

बीदर, बीजापुर, गुलबर्गा, यादगीर, धारवाड़, बैंगलोर (कर्नाटक) तथा कठुआ, राजौरी (जम्मू-कश्मीर), बोकारो, राँची, गिरिडीह, जमशेदपुर, रामगढ़, गुमला, हजारीबाग (झारखंड), बाँका, दरभंगा, डालटनगंज (बिहार) में बड़ी संख्या में लोगों ने पूज्य बापूजी के विरुद्ध रची गयी साजिश के खिलाफ मौन रैलियाँ निकालकर विरोध जताया। पटना में ५ दिन तक धरना चला तथा बेलगाम (कर्नाटक) में २० से अधिक दिनों तक लगातार धरना चला। पठानकोट, लुधियाना, चंडीगढ़, शाहपुरकंडी जि. पठानकोट, कपूरथला, जालंधर, होशियारपुर, मुकेरियाँ जि. होशियारपुर (पंजाब), भुवनेश्वर, झारसूगुड़ा, बरगड़ (ओड़िशा), फरीदाबाद, जींद, कुरुक्षेत्र (हरियाणा), जहीराबाद जि. मेदक, निजामाबाद, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), नई टिहरी, हरिद्वार, काशीपुर, देहरादून (उत्तराखंड), कोलकाता आदि स्थानों पर शांति रैलियाँ व धरना-प्रदर्शन करके विरोध जताया गया। साथ ही देशभर में संबंधित अधिकारियों को ज्ञापन भी सौंपा गया।

जंतर-मंतर, दिल्ली में ११ सितम्बर से प्रारम्भ हुआ 'जन-सत्याग्रह' सतत चालू है। यहाँ हजारों की संख्या में विभिन्न सम्प्रदायों व समाज के लोग पूरा दिन जप-पाठ, प्रार्थना करते हैं। **२८ सितम्बर** को **जंतर-मंतर, दिल्ली** में श्री सुरेशानंदजी व विभिन्न संतों की उपस्थिति में एवं **चंडीगढ़** में श्री नारायण साँईंजी एवं विभिन्न संतों की उपस्थिति में पूज्य बापूजी के समर्थन में **'जन-सत्याग्रह व विशाल संत-सम्मेलन'** का आयोजन हुआ। **श्रीरामपुर, जि. अहमदनगर (महा.)** में भी २८ सितम्बर को संत-सम्मेलन एवं जन-सत्याग्रह हुआ।

पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय-अत्याचार के विरोध में लाखों लोगों ने २९ सितम्बर को पूरे भारत में जगह-जगह विशाल मौन-रैलियाँ निकालीं। इस दिन उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बाड़मेर, निवाई (राजस्थान), नासिक, सोलापुर, उल्हासनगर, नागपुर, भुसावल, मुंबई, आकोट, अमरावती, अकोला, अहमदनगर (महा.), लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, जौनपुर (उ.प्र), खरगोन, भोपाल, सागर, दमोह (म.प्र.), रायपुर, धमतरी, दुर्ग, राजनांदगाँव, बिलासपुर, कवर्धा, कोरबा (छ.ग.), चंडीगढ़ (पंजाब), भुवनेश्वर, अनगुल (ओड़िशा), भावनगर, बड़ौदा, राजकोट, सिरोही (गुज.), हरिद्वार (उत्तराखंड), पटना (बिहार), बेलगाम, बीदर, बैंगलोर, बीजापुर (कर्नाटक), जमशेदपुर (झारखंड), जम्मू-कश्मीर, हैदराबाद (आं.प्र.), कोलकाता आदि अनेक स्थानों पर मौन-रैलियाँ निकालकर लोगों ने निर्दोष पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय को बंद करने तथा उन्हें शीघ्र-से-शीघ्र रिहा करने की माँग की। ३० सितम्बर को जोधपुर में विभिन्न महिला संगठनों एवं हजारों साधक महिलाओं ने पूज्य बापूजी का समर्थन करते हुए संकीर्तन यात्रा निकाली।

साजिशकर्ताओं और कुप्रचारकों को शर्म आनी चाहिए। न्यायपालिका और सरकार को अपने पद और सत्ता के दुरुपयोग से बचना चाहिए, सदुपयोग करना

चाहिए। भगवान सबका मंगल करें, सबको सद्बुद्धि दें। हरि ॐ ॐ... हरि ॐ...

प्यारे सत्यनिष्ठ प्रवक्ता और पाठकों की भगवान मति-गति और बढ़ायें और मंगल हो उनका। देश-विदेश में रैली निकालनेवालों को ईश्वर ने खूब सूझबूझ दी। उन्होंने शांति बनाये रखी, सत्य का पक्ष लिया। सत्य के पक्ष के लिए जो कुछ सहा वह तुम्हारे अंतरात्मा और ईश्वर से छुपा नहीं है। साजिशकर्ताओं की पोल भी समाज के सज्जनों से छुपी नहीं है।

देश-विदेश में कई भक्तों को पूज्य बापूजी के दर्शन और सत्संग का लाभ मिल रहा है। आश्चर्य को भी आश्चर्य हो। २७ सितम्बर को सागवाड़ा के गोरेश्वर महादेव पुल पर सात लोगों पर पूज्य बापूजी ने टॉर्च मारी, हालचाल पूछा, बातचीत की। वे व्यक्ति शिष्य होते तो आनंदित, आह्लादित होते लेकिन मनचले थे, भागे थाने। बोले : जोधपुर जेल से फरार बापू हमको मिले आदि आदि। (विस्तृत अनुभव हेतु निम्न वेबसाइट लिंक देखें -

http:/spiritualitydefiesscience. blogspot.in 2013/10/blog-post.html)

और भी कई भक्तों, सज्जनों और संतों को बापूजी मिलते हैं। इतने सारे सच्चे अनुभव हैं कि स्थानाभाव के कारण उनका यहाँ उल्लेख करना असम्भव है।

सत्य अवश्य सामने आयेगा

मैं १५ सालों से पूज्य बापूजी के सान्निध्य में आती रही हूँ। पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन के बाद मेरा जीवन पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। बापूजी हमेशा विपरीत परिस्थिति में भी मार्गदर्शक बनकर प्रोत्साहन देते रहे हैं। बापूजी की ही प्रेरणा का प्रभाव है कि मैं अनेक छात्र-छात्राओं को सही मार्ग पर चलना बता पायी हूँ। मैं इस बात की साक्षी हूँ कि पूज्य बापूजी द्वारा दिखलाये हुए मार्ग पर चलकर अनेक विद्यार्थी कुमार्ग से बच गये और उनके जीवन में उन्नतिकारक परिवर्तन हो गया। बापूजी ने विश्वमानव के कल्याण के लिए जो विश्वव्यापी दैवी कार्य किये हैं, उनकी गिनती नहीं हो सकती। जिन महापुरुष ने अपना सारा जीवन समाजोत्थान में लगा दिया, उन पर यह घटिया आरोप लगाया गया है। यह तथ्यहीन, सत्य से परे, बिल्कुल झूठा और बेबुनियाद है। पूज्य बापूजी निर्दोष हैं। सत्य अवश्य सामने आयेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

– श्रीमती प्रीता शुक्ला, प्रधानाचार्य, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, लखनऊ

अमृत बिन्दु
(पूज्य बापूजी की अमृतवाणी)

आप मुसीबतों से खेलो, मुसीबतों को देखकर डरो मत। दुःख आते हैं तो आपका बल बढ़ाने के लिए, सूझबूझ और संयम बढ़ाने के लिए, त्याग बढ़ाने के लिए और सुख आता है तो उदारता, स्नेह और परदुःखकातरता बढ़ाने के लिए।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

'हे अर्जुन ! जो योगी अपनी भाँति सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख को भी सब में सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।'

(गीता : ६.३२)

✻ जैसे दरिया तक आते-आते दरियाई हवाओं से माहौल, हवामान बदल जाता है। हम समझ जाते हैं कि दरिया पास है, ऐसे ही परमात्मा का अनुभव होने के पहले परमात्मा का स्वभाव अपने हृदय में आता है अर्थात् निर्भयता आने लगती है, ज्ञानयोग में स्थिति होने लगती है, इन्द्रियों का संयम होने लगता है, स्वभाव में सरलता आने लगती है। भगवत्प्राप्ति के छब्बीस दैवी सद्गुणों का प्राकट्य होने लगता है।

पूज्य बापूजी के समर्थन में जगह-जगह आयोजित हो रहे हैं संत-सम्मेलन एवं जन-सत्याग्रह

मुंबई

दिल्ली

चंडीगढ़ के संत-सम्मेलन में उपस्थित जन-समुदाय

जोधपुर में संतों एवं विभिन्न संगठनों ने निकाली रैली

पूज्य बापूजी के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र से व्यथित जनता उतरी सड़कों पर

दिल्ली

जोधपुर

षड्यंत्रकारियों द्वारा पूज्य बापूजी की छवि धूमिल करने के लिए कई प्रयास हो रहे हैं लेकिन जैसे ग्रहण के पूर्व एवं पश्चात् निर्मल, देदीप्यमान सूर्य आकाश में चमकते हुए पूरे संसार में प्रकाश फैलाता है, वैसे ही पूज्य बापूजी पहले भी समाज, देश व विश्व के मंगल में रत रहे हैं, आज भी रत हैं व आगे भी उनका सेवाकार्य सतत चलता ही रहेगा।

अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन को तरसती आँखें

निर्दोष पूज्य बापूजी के ऊपर लगाये बेबुनियाद, झूठे आरोप से देश-विदेश में करोड़ों-करोड़ों हृदय पीड़ित हो रहे हैं। अन्न-जल त्याग के कारण कइयों को शारीरिक-मानसिक कष्ट भुगतना पड़ रहा है, कइयों की नींद छिन गयी है। बिकाऊ मीडिया द्वारा पूज्य बापूजी के बारे में कैसी भी अनर्गल बातें दिखायी जायें लेकिन साधकों व जागरूक देशवासियों की श्रद्धा पर इसका कोई प्रभाव पड़नेवाला नहीं है।

कुप्रचार को काटने का सचोट साधन है सुप्रचार !

सिलसिलेवार रूप से लगाये गये झूठे आरोपों की हकीकत और षड्यंत्र का खुलासा करनेवाली इस सीडी एवं पुस्तिका को जन-जन तक पहुँचायें।